जगजीवन साहब की बानी

पहिला भाग

जिस में

उन महात्मा के अति मनोहर और उपकारक
पद चार अंगों के मय जीवन-चरित्र
बड़े जतन से शोध कर गूढ़ शब्दों
और कड़ियों के अर्थ व
संकेत सहित छापे
गये हैं।

PRINTED AND PUBLISHED AT THE
BELVEDERE STEAM PRINTING WORKS, ALLAHABAD,
BY SACHCHIDANANDA

1909

[दाम]

॥ निवेदन ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छपने की सूचना पहिले दी जा चुकी है और यह जताया गया है कि इसका अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी व उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। अब तक जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और कोई २ जो छपी थीं तो ऐसे छिन्न भिन्न, बेजोड़ और अशुद्ध रूप में कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ ऐसे हस्त-लिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकर शब्द जहाँ तक पिछले पाँच बरस के उद्योग से हो सका असल या नकल कराके मँगवाये और यह कार्रवाई बराबर जारी है। जहाँ तक हो सकता है सर्व साधारन के उपकारक शब्द चुनकर और कई लिपियों का मुकाबला करके ठीक रीति से शोध कर संग्रह किये जाते हैं, ऐसा नहीं होता कि औरों के छापे हुए ग्रंथों की भाँति बेसमझे और जाँचे छाप दिये जायँ। लिपि के शोधने में प्रायः उन्हीं ग्रंथकार महात्मा के पंथ के जानकार अनुयायी से सहायता ली जाती है और शब्दों के चुनने में यह भी ध्यान रक्खा जाता है कि वह सर्व साधारन की रुचि के अनुसार और ऐसे मनोहर और हृदय-बेधक हों जिनसे आँख हटाने का जी न चाहे और अंतःकरन भी शुद्ध हो।

कई बरस से यह पुस्तक-माला छप रही है और जो जो कसरें जान पड़ती हैं वह आगे के लिये दूर की जाती हैं। कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत नोट में दे दिये जाते हैं। जिन महात्मा की बानी है उनका जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा जाता है। परंतु इस सब जतन पर भी यह नहीं कहा जा सकता कि हमारी पुस्तकें निर्दोष हैं अर्थात उन में अशुद्धता और क्षेपक नाम-मात्र नहीं हैं।

॥ अंगों का सूचीपत्र ॥

अंग	पृष्ठ
बिनती और प्रार्थना	१–३८
चेतावनी	३८–८२
गुरु और शब्द महिमा	८२–१०२
कर्म भर्म निषेध और उपदेश सतगुरु व शब्द भक्ति का	१०२–१२८

॥ शब्दों का सूचीपत्र ॥

अ

शब्द	पृष्ठ
अजब यहि नगर केर सँवार	८८
अब जग हमहिं सिखवत ज्ञानि	८२
अब तुम होहु दयाल	२१
अब तो ज्ञान कथे को भाई	११३
अब मैं कहौं कौन बयान	५
अब मैं करौं धौं कौन उपाई	२१
अब मैं कहौं कहाँ लगि ज्ञान	२९
अब मैं कहौं का कछु ज्ञान	५
अब मैं कवन गनती आऊँ	३
अब मैं कासों कहौं सुनाई	२५
अब मोर मनुवाँ समुझि डेरात	१२
अब मोहिं जानु आपन दास	३
अब सुनि लीजै इतनी हमारी	१३
अरे नर का एहि तकि बौराना	३९
अरे मन अंतै कतहुं न धाव	११८
अरे मन करहु नाम तें प्रीति	७१
अरे मन करहु सत्त बिचार	७३
अरे मन गुरु चरन नहिं त्यागु	९०
अरे मन चरन तें रहु लागि	९१
अरे मन जपहु मंत्र बिचारि	५३
अरे मन देहु तजि मतवारि	८३

शब्द				पृष्ठ
अरे मन देहु सबै बिसराय	...	...	...	४१
अरे मन बौरे समुझि बिचारु	...	...	...	५९
अरे मन रहहु चरन तें लागि	...	...	...	५२
अरे मन रहहु रटना लाइ	...	...	...	९३
अरे मन लटकि अटकि रहु लागि	...	...	...	५५
अरे मन समुझ करु पहिचान	...	...	...	३८
अरे मन समुझि बूझहु ज्ञान	...	...	...	५१
आपु क चीन्हहु रे भाई	...	...	...	६७
आपु तें डारत आपु नसाई	...	...	...	४८
आरति करौं सुनो मेरे प्यारे	...	...	...	६६
और कछु मंत्र नाम सम नाहिं	...	...	...	११४
अंतर जो कोउ नाम धुनि लावै	...	...	...	११३
अंतर सुमिरहु नाम बिसारहु नाहीं	...	...	...	१२६

इ

इत उत आसा देहु सब त्यागि	...	...	...	१२८

ए

ए मन काहें क पस्यो भुलाइ	...	...	...	७५
ए मन जोगी बैठि मढ़ी जपु राम	...	...	...	१२१
ए मन त्यागि देहु गुमान	...	...	...	६१
ए मन नामहिं सुमिरत रहौ	...	...	...	१२७
ऐसी डोरि लगावहु पोढ़ि	...	...	...	११८

क

कर न सुमिरिनी लेहु	...	...	...	१०२
कर मुकाम जहँ निर्गुन नाम	...	...	...	११६
कलि जागत जे राम की कानि	...	...	...	६२

शब्द	पृष्ठ
करहु बंदगी बंदे सोई	७८
करिये निरबान ध्यान चरनन लपटाई	९१
काहू कहीं कहि आवत नाहीं	३६
कोउ काहुइ दोष न देई	६५
कोउ बिन भजन तरिहै नाहिं	११०
ग	
गुरु बलिहारियाँ मैं जाउँ	९४
च	
चरनन में लागी रहिहौं री	९७
चरन सरन अब आयौं	२३
चरन सरनर हौं	१११
चलु चढ़ी अटरिया धाई री	१००
चित्त नित्त रहै लागि पलक नाहिं छूटै	९०
ज	
जग की कहो बात नहिं भाई	७७
जनम पाइ जग जान्यो नाहीं	५८
जब सुन सब्द माने कोय	९२
जिन मन गह्यो नामहिं जानि	७९
जे जन नाम भजि बलवान	८३
जो कोइ यहि बिधि तीरथ न्हाय	११८
जो पै नाम रहै जप लाय	५३
ड	
डोरि पोढ़ि लागि रहै अंतर के माहीं	७२
त	
तीरथ ब्रत की तजि दे आसा	९९
तुम तें कहै को बारम्बार	२

शब्द				पृष्ठ
तुम सों मन लागो है मोरा	...	...	...	१४
तेरा नाम सुमिरि ना जाय	...	...	...	१९
द				
दुनियाँ जानि बूझि बौरानी	...	...	...	४२
दुनियाँ दुबिधा सबै परी	...	...	...	४३
दुनियाँ धंध लागि अरुझानी	...	...	...	५६
दुनियाँ परि परपंच न जानी	...	...	...	४८
दुनियाँ हमहिं सिखावत ज्ञान	...	...	...	१०४
देखहु रे बौरे नैन उघारि ...	...	...	...	४९
देखो री जोगिया रहत कहाँ	...	...	...	९५
न				
नाम बिनु केहि काम कह जीवन संसार		...	...	१०१
नाम मंत्र सम नाहीं कोय	...	...	...	१२३
नाम रटि रटत तृकुटी गगन चढ़ि	...	...	...	१०१
नाम सुमिर मन बावरे ...	...	...	...	८१
नामहिं बड़े भाग तें पायो ...	...	...	...	९६
नैना चरनन राखहुं लाय ...	...	...	...	२७
प				
प्रात नाम सतगुरु का गावै	...	...	...	७७
प्रभु गति जानि नाहीं जाइ	...	...	...	१
प्रभुजी आपनो मोहिं जानि	...	...	...	८७
प्रभुजी का बसि अहै हमारी	...	...	...	७
प्रभुजी चहो सो तुम करहु	...	...	...	३७
प्रभुजी तुम जानत गति मेरी	...	...	...	८
प्रभुजी बकसहु चूकि हमारी	...	...	...	९८

शब्द	पृष्ठ
प्रभुजी बसि हमार कछु नाहीं	३३
प्रभुजी बुद्धि मोहिं केतानि	१०
प्रभु तुम सों मन लागा मेरा	२९
प्रभु बिन किरपा भक्ति न होय	९
पर्खौं मैं सार कैसे जानौं रे	३८
ब	
बनत न कतहूं अनत न जाय	९८
बहुतक देखी देखा करहीं	१०१
बहु पद जोरि जोरि करि गावहिं	११२
बार बार कहि बिनय सुनावौं	२२
बालक बुद्धि हीन मति मोरी	१८
बिनती लेहु इतनी मानि	४
बिनती सुनिये कृपा-निधान	२४
बिन वहि नाम तरै कोउ नाहीं	११९
बैठि उजियारी देखि ले भाई	४५
बैठि रहहु मन चरनन पास	७१
बौरे काहे का करत गुमान	५९
बौरे जामा पहिरि न जाना	४५
बौरे नाम रटु मन लाय	६९
बौरे मन को नहिं भरमाव	१०८
बौरे समुझि देखहु ज्ञान	८९
बौरे समुझि देख मन माहीं	५६
बंदा कौन बंदगी करई	८
भ	
भइउँ मैं सनाथ आइकै	२७
भक्त जक्त त्यागि जागि लागि	१०१

शब्द				पृष्ठ
भाई रे कहा न मानै कोई	...	...	...	६६
भे जे नाम भजि मस्तान	...	...	...	११६

म

मन छुह नाम बिसरि न जाय	...	...	...	९३
मन गृह ग्राम यह अस्थान	...	...	...	१०९
मन जग जन्मि कै भजि लेहु	...	...	...	८५
मन तन खाक करि कै जानु	...	...	...	६६
मन तहँ जाइ फकीरी करना	...	...	...	१२१
मन तुम करहु गगन मैंदान	...	...	...	९४
मन तुम काहे रसनि बिसराई	...	...	...	४४
मन तुम भजहु	...	...	...	७०
मन तुम रहहु चरनन लागि	...	...	...	८०
मन तुम रहहु चरन सरनाई	...	...	...	१०९
मन तैं काहे का करत गुमान	...	...	...	४०
मन तैं नाहिं इत उत धाव	...	...	...	४७
मन बिनु समुझे नाहीं होय	...	...	...	७३
मन मदमाते फिरहिं बेहाल	...	...	...	३९
मन महँ अंतर सुमिरहु नाम	...	...	...	४६
मन महँ नाहिं बूझत कोय	...	...	...	४७
मन महँ समुझि भजहु रे भाई	...	...	...	११७
मन मैं मारि आगम जान	...	...	...	९२
मन रे प्रभु सों चित्त लगाव	...	...	...	७४
मनुवाँ ऐसी प्रीति लगाव	...	...	...	४०
मनुवाँ का तकि तैं बौराना	...	...	...	४४
मनुवाँ जोग करै नहिं जाना	...	...	...	८६

शब्द	पृष्ठ
मनुवाँ रहहु जिकिरि लगाय	१२०
मनुवाँ सत्त नाम ले गाइ	६१
मनुवाँ समुझि करहु तेवान	५०
महिमा प्रभु मो सों बरनि न जाय	९९
मोहिं तें करि न बंदगी जाय	२
मेरे गुनाह माफ करिये अब साँईं	२६
मेरी बिनय सुनिये राम	३०
मेरी हाथ तुम्हारे डोरी	३२
मैं तौ अरज करौं दरबार	२०
मैं तौ दास तुम्हार कहावौं	१०
मैं तैं जग त्यागि मन	४०
मैं देख्यों निरखि निहारि	९६
मोर दिल भयो मतवारा	९४
मोहिं का बार बार भटकायो	३१

य

यहि जग नाम भजे तरि गये	८५
यहि जग महँ बंदे	६९
यहि जियने का करु न गुमान	४९
यहि बन बनत नाहिं बनाये	८३
यहु मन गगन मंदिल राखु	९५

र

रटहु रसना नाम अच्छर	५१
रहु मन नाम तें लौ लाय	८६
रहु सत साँईं राखु निहार	४५
राम क भजन करहु मन माहीं	१२४

शब्द	पृष्ठ

स

शब्द	पृष्ठ
सतगुरु तुम मोहिं सिखायो	१२२
सतगुरु मैं तो अहौं तिहारा	१
सतगुरु समरथ साहब चरनन पर वारी	१८
सत मत कहत अहौं सुनाइ	१२५
सत्त नाम बिना मन कैसे पार तरिहौ	५०
सत्त नाम सुमिरहु मन माहीं	७५
सत्त नाम तत्त निर्मल	१२०
सब खाकहि मिलिहै रे भाई	१११
सब जग दीन्ह धंधे लाय	११५
सब जग देखि देखि के भूला	११५
सब जग मैं मैं करि के भुलाना	९०
साधो अस समौ बहुरि न होई	८४
साधो कठिन रीति कल माहीं	६३
साधो कठिन है उदयान	८७
साधो करै बिबाद नहिं कोई	६८
साधो कहत अहौं गोहराई	६४
साधो कहा जो मानै कोई	४३
साधो कहै तो कहा न जाय	९८
साधो कहौं तो कहा न जाई	७३
साधो का कहि सब्द सुनावै	१२३
साधो जब तें यह तन थाको	५४
साधो दुइ अच्छर तत सार	८०
साधो देखहु अपने मनहिं बिचारी	५७
साधो देखहु अंतर माहीं	१०६
साधो नाम चाखि बौराना	१०६

शब्द	पृष्ठ
साधो नाम भजन जिन ठाना	१०४
साधो बिन किरपा भक्ति न होय	१०५
साधो भक्ति सहजहि ध्यान	१०७
साधो भजहु नाम मन लाइ	७६
साधो भेष बाँधि गफिलाने	११०
साधो मन मम रहहु बिचारि	६०
साधो सत्त नाम जपु प्यारा	७०
साधो समझो मनहीं माहीं	४२
साधो सुनु कलि का व्योहारा	६४
साधो सुमिरन भजन करो	९५
साधो सुमिरहु नाम रसाला	१२६
साहब अजब कुदरत तोर	३८
साहब तुम केते अधम उधारी	३४
सुनु सखि तुम तें कहौं समुझाई	५२
सुनु सुनु सखि री चरन कमल	८८
सुमिरहु मन राम नाम चित लाइ	१२२
सुरति बसी मन नाम फिरत	९७
संतन कह्यो रमज से बानी	१०३
संतो गहहु सुरति सँभारि	७०
साँई इतनी बिनती मोरि	११
साँई कठिन भक्ति है तेरी	३७
साँई कुदरति अजब तुम्हारी	१७
साँई को केतानि गुन गावै	४
साँई को गति गावै तेरी	२२
साँई चहहु करहु सो होई	३५

शब्द				पृष्ठ
साँईं जब तुम मोहिं बिसरावत	...	...	...	६
साँईं नावों तोहि कों माथ	...	...	...	३३
साँईं मेरे हम हैं दास तुम्हारे	...	...	...	३०
साँईं मोहिं और न भावै	...	...	...	२८
साँईं मोहिं तें सुमिर न जाई	...	...	...	१५
साँईं मोहिं भरोस तुम्हारा	...	...	...	३४
साँईं मोहिं सब कहत अनारी	...	...	...	१०३
साँईं मैं अजान अज्ञाना ...	...	...	...	२५
साँईं मैं तो बड़ा अनारी	...	...	...	५६
साँईं मैं तुम्हरी बलिहारी	...	...	...	२४
साँईं मैं नहिं आपु कों चीन्हा	...	...	...	१३
साँईं मैं नहिं आपु क जाना	...	...	...	३१
साँईं मैं नहीं कछु जाना	...	...	...	६
साँईं यह बिनती सुनु मेरी	...	...	...	३२
ह				
हम तें चूक परत बहुतेरी	...	...	...	२१
हमारा दोख करै नहिं कोई	...	...	...	४१
हम समान नहिं कोऊ भाई	...	...	...	५५
हे मन थकहु तो तकहु निसान	...	...	...	१०२

जगजीवन साहब का जीवन-चरित्र

जगजीवन साहब जाति के छत्री थे और सरदहा गाँव में जो बाराबंकी (अवध) के ज़िले में सरजू नदी के किनारे कोटवा से दो कोस की दूरी पर बसा है जन्म लिया था। ठीक समय इन के जन्म और मरन का मालूम नहीं होता लेकिन हिसाब करने से अब से अनुमान दोसै बरस पहिले उन का प्रगट होना और १४० बरस हुए गुप्त होना पाया जाता है। इस का प्रमान पादरी जान टामस के लेख से भी मिलता है जिन्हों ने लिखा है कि जगजीवन साहब ने सत्तनामी मत को चलाया और बिक्रमी संबत १८१७ मुताबिक़ ईसवी सन १७६१ में ज्ञान प्रकाशक नामी ग्रंथ लिखा। इस हिसाब से उस ग्रंथ को रचे १४७ बरस हुए। पादरी साहब ने जगजीवन साहब की जाति खत्री लिखी है पर यह भूल जान पड़ती है उन्हों ने छत्री को खत्री समझा।

जगजीवन साहब के पिता खेती करते थे और लड़कपन में जगजीवन साहब अपने बाप के गाय बैल चराया करते थे परंतु बाल अवस्था ही से इन के चित्त का संसारी कामों से हटाव और परमार्थ की ओर झुकाव था और साधुओं का संग जहाँ तक औसर मिलता करते थे। एक दिन एक पूरे फ़क़ीर बुल्ला साहब मय एक महात्मा गोबिंद साहब के (जो पलटू साहब के गुरू थे) जिस मैदान में जगजीवन साहब चौपे चरा रहे थे पहुँचे और उन से चिलम चढ़ाने के लिये आग माँगी। जगजीवन साहब तुरत अपने घर दौड़ कर गये और आग लाये और उसी के साथ दोनों

महात्माओं के पीने को दूध भी लेते आये, पर जी में डरते थे कि बाप की मार न पड़े। उन के चित्त की यह दशा देख कर बुल्ला साहब ने हँस कर दूध ले लिया और बोले कि डरो मत हम लोगों को देने से तुम्हारे घर का दूध घटा नहीं बरन बढ़ गया। जगजीवन साहब अचरज में आकर उलटे पाँव घर को लौटे तो देखते क्या हैं कि दूध का बरतन मकानक भर कर उबल रहा है और सारे घर में मानो दूध की नदी बह रही है। जगजीवन साहब उन साधुओं के पीछे दौड़े जो वहाँ से चल दिये थे और कुछ दूर जाकर उन को पकड़ा और प्रार्थना की कि हम को मंत्र उपदेश करके अपना चेला बनाइये। बुल्ला साहब ने जवाब दिया कि कान में मंत्र फूकने की ज़रूरत नहीं हैं और साथ ही उन पर ऐसी दया की दृष्टि डाली कि जगजीवन साहब की दशा कुछ और ही हो गई और गहरा प्रेम और बैराग जाग उठा। फिर बु ा साहब बोले कि हम केवल तुम को चिताने के लिये आये थे तुम पिछले जन्म के बड़े अभ्यासी हो अब थोड़े ही दिन के अभ्यास से तुम्हारा जोग पूरा हो जायगा। जगजीवन साहब ने उन के चरनों पर गिर कर प्रार्थना की कि कोई चिन्ह अपना देते जाइये जिस पर बुल्ला साहब ने अपने हुक्के में से एक काला धागा और गोबिंद साहब ने अपने हुक्के में से सफ़ेद धागा तोड़ कर उन की दहनी कलाई पर बाँध दिया। यह चाल दहनी कलाई पर काला और सफ़ेद धागा बाँधने की जगजीवन साहब के पंथ वालों में जो सत्तनामी कहलाते हैं अब तक जारी है और इस दोरंगे धागे को आँदू कहते हैं।

फिर तो जगजीवन साहब तन मन की सुद्ध बिसार कर अभ्यास और भक्ति में लगे और दूर दूर से लोग उन के दर्शन और उपदेश लेने के निमित्त आने लगे। यह महिमा उन की देख कर गाँव वालों को ईर्षा पैदा हुई और उन को सताने का कोई जतन उठा नहीं

रक्खा। जगजीवन साहब उन से पीछा छुड़ाने के लिये सरदहा गाँव को छोड़ कर कोटवा में जा रहे। कहते हैं कि उन के जाते ही सरदहा गाँव को सरजू नदी बहा ले गई।

कोटवा में जगजीवन साहब की समाध और सातवीं गद्दी अब तक मौजूद है और हर साल उन के पंथ वालों और साधारन लोगों का बड़ा भारी मेला होता है पर और पुराने मतों की तरह इस मत में भी अब सच्चे अभ्यासी देख नहीं पड़ते।

जगजीवन साहब गृहस्थ आश्रम में थे। उन के विषय में कितने चमत्कार प्रसिद्ध हैं जिन में से एक यह है कि उन की लड़की का ब्याह राजा गोंडा के लड़के से ठहरा। जब बरात आई समधी ने बिना माँस के भोजन करने से इनकार किया। इस पर जगजीवन साहब ने मौज से बैंगन की तरकारी बनवा दी जिसे सब बरातियों ने माँस समझ कर बड़ी रुचि से खाया। इसी कारन उनके पंथ वाले बैंगन को माँस के तुल्य समझ कर उस को नहीं खाते।

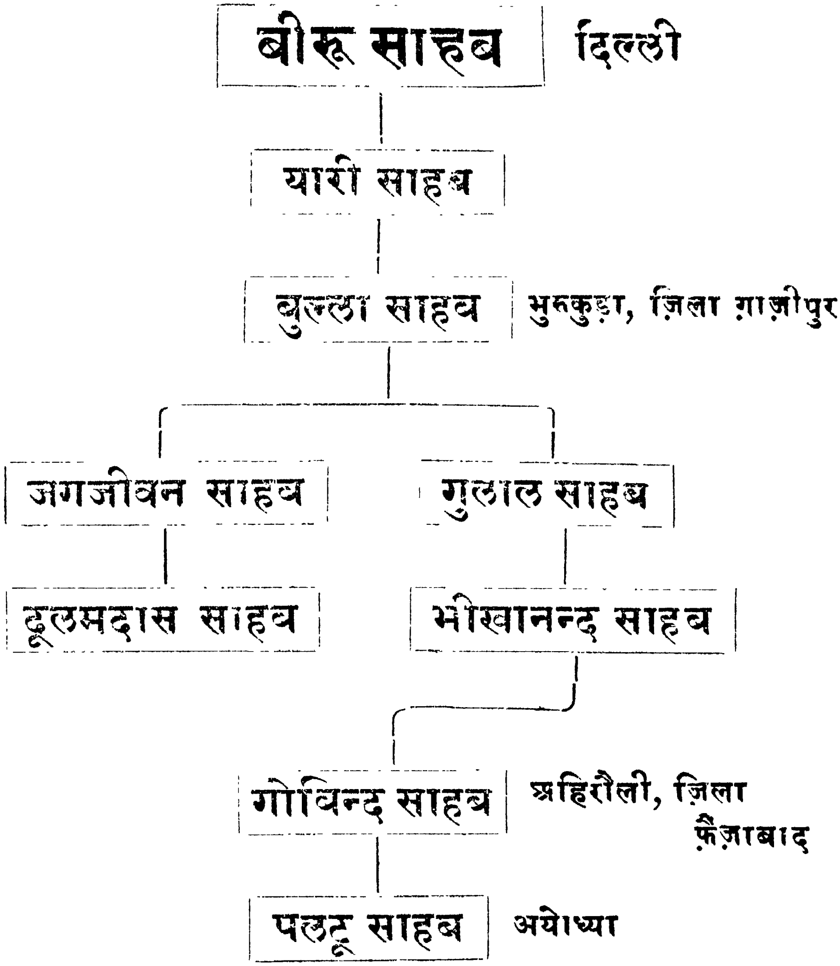
जगजीवन साहब पूरे संत थे जिन की ऊँची गति उनकी बानी पुकारती है। संपूर्ण बानी रत्न-जटित है जिस के अंग अंग से भेद, दीनता और प्रेम टपकता है और पाठ करने से चित्त गद्गद होकर प्रेम के घाट पर आ जाता है। इनके गुरू बुल्ला साहब की बानी भी बड़े ऊँचे घाट की और अत्यंत कोमल है जो छापी जायगी।

जगजीवन साहबका अति मनोहर ग्रंथ शब्द-सागर है जिस का पहिला भाग यह है जो दो लिपियों से मिलान करके अंगों के क्रम अनुसार भरसक बहुत शुद्धता के साथ छापा गया है। दूसरा भाग जिस में और और अंग हैं फिर छापा जायगा।

इस के सिवाय पादरी जान टामस लिखते हैं कि जगजीवन साहब के दो ग्रंथ ज्ञानप्रकाश और महाप्रलय और हैं। इन ग्रंथों को हमने नहीं देखा है। पहिली पुस्तक के बिषय में पादरी साहब कहते हैं कि वह महादेव और पारबतीजी के बीच प्रश्नोत्तर के रूपक में है पर उस का बिषय क्या है यह नहीं बतलाया–ज़ाहिर में जैसा कि नाम से जान पड़ता है ज्ञान पर सम्बाद् होगा। दूसरी पुस्तक में इस तरह चर्चा की है कि भक्त जन सब के बीच में रह कर सब से अलग है, वह सब जानता है किसी से पूछने का मुहताज नहीं है, वह न जनमता न मरता है, न सीखता न सिखाता है, न रोता न पछताता है, उस को न दुख व्यापता है न सुख, न न्याय न अन्याय, इत्यादि–फिर पूछा है कि ऐसे पुरुष का कोई पता बतला सकता है।

जगजीवन साहब के गुरमुख चेले दूलनदास जी थे जिन का नाम प्रसिद्ध है।

श्रीमहंत राजारामजी बड़ागाँव ज़िला बलिया की कृपा से हम को जगजीवन साहब के गुरु-घराने की बंशावली का वृक्ष मिला है जो यहाँ छापा जाता है। उस से जान पड़ेगा कि कैसे कैसे भारी भक्त और महात्मा इस गुरु-घराने में हुए हैं, और पलटू साहब जिन की अद्भुत कुंडलिया और शब्दावली हम छाप चुके हैं और भीखा साहब जिन की शब्दावली अब छपेगी इसी घराने के थे॥


बीरू साहब
दिल्ली
यारी साहब
बुल्ला साहब
भुरकुड़ा, ज़िला ग़ाज़ीपुर
जगजीवन साहब
गुलाल साहब
दूलमदास साहब
भीखानन्द साहब
गोविन्द साहब
अहिरौली, ज़िला फ़ैज़ाबाद
पलटू साहब
अयोध्या

जगजीवन साहब की बानी

बिनती और प्रार्थना ।

॥ शब्द १ ॥

सतगुरु मैं तो अहौं तिहारा ।
पूजा अर्चा नाहीं जानों, जानों नाम पियारा ॥१॥
सो हित सदा होत नहिं अनहित, बास किहे संसारा ।
कहत हैं। दीन लीन रहों तुम तें, तुम ब्रत राखनहारा।२।
अंतर ध्यान गगन ह्वै मगना, निरखौं रूप तिहारा ।
पुहुप गूंधि कै माला लैके, सो पहिराओं हारा ॥३॥
पान चून औ खैर सुपारी, गरी जायफर डारा ।
कपुर लाइची मेरिया* वा में, पूजा यही हमारा ॥४॥
कटहर कोआ मेवा लायों, सोऊ पवावौं† प्यारा ।
कनक नीर कर ते मुख धोओं, तकि के चरन पखारा।५।
सो चरनामृत नित्त पियो है, सुभ भा जन्म हमारा ।
जगजीवन को दिहे रहहु यह, दाता होहु हमारा ॥६॥

॥ शब्द २ ॥

प्रभु गति जानि नाहीं जाइ ।
अहै केतिक बुद्धि केहिं महँ, कहै को गति गाइ ॥१॥

*मिलाया । †खिलाऊं ।

सेस सम्भू थके ब्रह्मा, बिस्नु तारी लाइ।
है अपार अगाध गति प्रभु, कहूं नाहीं पाइ ॥२॥
भान गन ससि तीनि चौथौ, लिया छिनहिं बनाइ
जोति एकै कियौ बिस्तर, जहां तहां समाइ ॥३॥
सीस दैकै कहैं। चरनन, कबहुं नहिं बिसराइ।
जगजीवन के सत्य गुरु तुम, चरन की सरनाइ ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

तुम ते कहै को बारम्बार।
जानिये हित आपनो, मो राखिये दरबार ॥ १ ॥
टरैं ना मैं करहुं सेवा, कठिन माया जार।
समुझि सो डर होत निसु दिन, तारु अब की बार ।२।
नहीं गुन कछु अहै एको, औगुनं अधिकार।
करहु माफ गुनाह जैसे, मातु पालत बार* ॥३॥
जात जानी दयाति† अब, प्रभु मोहिं है इतबार ॥
जगजीवन निरबाहिये, प्रभु जवन कीन करार।४।

॥ शब्द ४ ॥

मोहिं ते करि न बंदगी जाइ।
सुद्धि तुमहीं बुद्धि तुमहीं, तुमहिं देत लखाइ ॥१॥
केतनि हैं। गनती में केती, कहि न सकैं। बनाइ।
चहे चरन लगाइ राखो, चाहिये बिसराइ ॥२॥

*बालक। †दात, बख़्शिश।

देवता मुनि जती सुर सब, रहे तारी लाइ ।
पढ़ै चारिउ बेद ब्रह्मा, गाइ गाइ सुनाइ ॥३॥
भस्म अंग लगाइ संकर, रहे जोति मिलाइ ।
कौन जानै गति तुम्हारी, रहे जहँ तहँ छाइ ॥४॥
जानिये जन आपना मोहिं, कबहुं ना बिसराइ ।
जगजीवन पर करहु दाया, तबहिं भक्त कहाइ ॥५॥

॥ शब्द ५ ॥

अब मैं कवन गनती आउ ।
दियो जबहिं लखाइ महिं कहँ, तबहिं सुमिरौ नाउ ॥१॥
समुझि ऐसे परत मोहिं कहँ, बसे सरबस ठाउँ ।
अहो न्यारे कहूं* नाहीं, रूप की बलि जाउँ ॥२॥
नाम का बल दियो जेहि कहँ, राखि निर्भय गाउँ ।
काल को डर नहीं उहवां, भला पायो दाउँ ॥३॥
चरन सीसहिं राखि निरखी, चाखि दरस अघाउँ ।
जगजीवन गुरु करहु दाया, दास तुम्हरा आउँ ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

अब मोहिं जानु आपन दास ॥ टेक ॥
सीस चरन में रहै लागो, और करौं न आस ।
दियो मोहिं उपदेस तुमहीं, आइ तुम्हरे पास ॥१॥

*कभी ।

लियो ढिग बैठाइ कै जग, जानि सबै निरास ।
भला है अस्थान अम्मर, जोति है परगास ॥२॥
करौं बिनती बहुत बिधि ते, दीजिये विस्वास ।
गति तुम्हारी कौन जानै, जगजीवन है दास ॥३॥

॥ शब्द ७ ॥

बिनती लेहु इतनी मानि ।
कहैं का कहि जात नाहीं, कवन अहैं केतानि ॥१॥
कियो जबहीं दया तुमहीं, लियो संतन छानि ।
रूप नीक लखाय दीन्ह्यौ, होत लाभ न हानि ॥२॥
रहत लागे सदा आगे, सब्द कहत बखानि ।
लागि गा सो पागि गा, पुनि गगन चढ़ि ठहरानि।३।
निरमल जोति निहारि निरखत, होत अनहद बानि*।
जगजिवन गुरु की भई दाया, लियो मन महँ छानि।४।

॥ शब्द ८ ॥

सांईं को केतानि गुन गावै ।
सूझि बूझि तस आवै तेहि का, जेहि काजैान लखावै१
आपुहि भजत है आपु भजावत, आपु अलेख लखावै।
जेहिं कहं अपनी सरनहिं राखै, सोई भगत कहावै।२।
टारत नहीं चरन ते कबहूं, नहिं कबहूं बिसरावै ।
सूरति खैंचि ऐंचि जब राखत, जोतिहिं जोत मिलावै३

*बानी ।

सतगुर कियो गुरुमुखी तेहिकाँ, दूसर नाहिं कहावै ।
जगजीवन ते भे संग बासी, अंत न कोऊ पावै ॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

अब मैं करौं कौन बयान ।
चहौ पल में करहु सोई, होय सो परमान ॥१॥
सहस जिभ्या सेस बरनत, कहत बेद पुरान ।
मोहिं जैसी करहु दाया, करहुं तैसि बखान ॥२॥
संतन काँह सिखाइ लीन्ह्यो, कहत सोई ज्ञान ।
लागि पागि कै रहै अन्तर, मस्त रहत निर्बान ॥३॥
रहे मिल तुम्ह नहीं न्यारे, कबहुं नहिं बिलगान ।
जगजीवन धरि सीस चरनन, नहीं भावै आन ॥४॥

॥ शब्द १० ॥

अब मैं कहौं का कछु ज्ञान ।
बुद्धि हीनं सुद्धि हीनं, हौं अजान हैवान ॥१॥
ब्रह्म सेस महेस सुमिरत, गहै अन्तर ध्यान ।
संत तंते रहत लागे, कहत ग्रंथ पुरान ॥२॥
जोति एकै अहै निर्मल, करै सबै बयान ।
जहँा जैसै भाव आहै, भयो तस परमान ॥ ३ ॥
करौ दाया जानि आपन, नहीं जानहुं आन ।
जगजीवन दास सत्य समरथ, चरन रहु लिपटान ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

साईं मैं नहीं कछु जाना ॥ टेक ॥
बाल बुद्धि कछु नाहिं जान्यो,
रह्यो सदा हैवाना ।
करि कुसंग कुमारग डोल्यौ,
निसि बासर अभिमाना ॥ १ ॥
नहिं मति मोरि कहौं मैं कहँ लगि,
तुम सब कृपा-निधाना ।
मोहिं सिखाइ पढ़ाइ दृढ़ावहु,
तबहिं धरौं मैं ध्याना ॥ २ ॥
मैं बपुरा केतनि किन माहीं,
करि नहिं सकौं बखाना ।
जगजीवन पर दाया करिये,
गुरु निरखै निरबाना ॥ ३ ॥

॥ शब्द १२ ॥

साईं जब तुम मोहिं बिसरावत ।
भूलि जात भौजाल जगत मां,
मोहिं नहीं कछु आवत ॥ १ ॥
जानि परत पहिचान होत जब,
चरन सरन लै आवत ।

तब पहिचान होत है तुम ते,
सूरति सुरति मिलावत ॥ २ ॥
जो कोइ चहै कि करौं बंदगी,
बपुरा कौन कहावत ।
चाहत खैंचि सरन ही राखत,
चाहत दूरि बहावत ॥ ३ ॥
हौं अजान अज्ञान अहौं प्रभु,
तुम ते कहि कै सुनावत ।
जगजीवन पर करत हौ दाया,
तेहि ते नहिं बिसरावत ॥ ४ ॥

॥ शब्द १३ ॥

प्रभुजी का बसि अहै हमारी ।
जब चाहत तब भजन करावत,
चाहत देत बिसारी ॥ १ ॥
चाहत पल छिन छूटत नाहीं,
बहुत होत हितकारी ।
चाहत डोरि सूखि पल डारत,
डारि देत संसारी ॥ २ ॥
कहँ लहि बिनय सुनावौं तुम ते,
मैं तौ अहौं अनारी ।
जगजिवन दास पास रहै चरनन,
कबहूं करहु न न्यारी ॥ ३ ॥

॥ शब्द १४ ॥

बंदा कौन बंदगी करई ।
रात दिवस मिलि करै बंदगी,
जो पै कबूल न परई ॥ १ ॥
चाहत है मैं रहौं चरन ढिग,
दृढ़ ह्वै धरनी धरई ।
सांईं चहत मोर है नाहीं,
दूर दूर ह्वै रहईं ॥ २ ॥
जोगी जती मुनि जब सब थाके,
करि कै तपस्या मरई ।
नाहीं हित करि जानत आपन,
नाहिं काज कछु सरई ॥ ३ ॥
आपु बंदगी करत करावत,
जेहिं पर किरपा करई ।
जगजिवन दास बिनती करि,
बिनवै सीस चरन तर धरई ॥ ४ ॥

॥ शब्द १५ ॥

प्रभु जी तुम जानत गति मेरी ।
तुम ते छिपा नहीं आहै कछु,
कहा कहौं मैं टेरी ॥ १ ॥

जहँ जहँ गाढ़ पर्‌यो भक्तन कां,
तहँ तहँ कीन्ह्यो फेरी ।
गाढ़ मिटाय तुरन्तहिं डार्‌यो,
दीन्ह्यो सुक्ख घनेरी ॥ २ ॥
जुग जुग होत ऐसै चलि आवा,
सो अब साँझ सबेरी ।
दियो जनाय सोई तस जानै,
बास मनहिं तेहि केरी ॥ ३ ॥
कर औ सीस दियो चरनन महँ,
नहिं अब पाछे हेरी ।
जगजीवन के सतगुरु साहब,
आदि अंत तेहि केरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द १६ ॥

प्रभु बिन किरपा भक्ति न होय ।
कर्म अघ तेहि मेटि डार्‌यो मंत्र सिखयो सोय ॥ १ ॥
तिरथ बरत करि तपस्या, डारि यहु तन खोय ।
नाहिं लाहत नाम रस बहु, नाहिं दृढ़ता होय ॥ २ ॥
कोटि तीर्थ अस्नान करि कै, सेन रहे समोय ।
ऐस करि कै बिचार नाहीं, रहे मन मन रोय ॥ ३ ॥

पढ़ि पुरान गरंथ गीता, बकत कीरति सोय ।
नहीं अजपा डोरि लागै, भक्ति कैसे होय ॥ ४ ॥
हो दयाल निहाल कर मोहिं, दूजा नाहिन कोय ।
जगजीवन को चरन गुरु के, नहीं न्यारा होय ॥५॥

॥ शब्द १७ ॥

प्रभु जी बुद्धि मोहिं केतानि ।
दया जब तुम कीन मो पर, कह्यौ ज्ञान बखानि ॥१॥
भ्रमत रह्यौ अपंथ मारग, पस्यो जाही जानि ।
कहाँ लहि मैं कहौं औगुन, महा अघ की खानि ॥२॥
मेटि सकल गुनाह औगुन, सरन लीन्ह्यो आनि ।
जानि हित करि आपना मोहिं, और नाहीं मानि ॥ ३॥
कहत हौं कर जोरि सुनिये, मोरि अन्तर जानि ।
जगजिवन दास तुम्हार आहै, तुमहिं लियो पहिचानि४

॥ शब्द १८ ॥

मैं तौ दास तुम्हार कहावौं ।
तुम तजि और न जानौं कोई,
औरै सीस न नावौं ॥ १ ॥
चरन तुम्हारे लागि रहौं मैं,
और सबै बिसरावौं ।
तुमहीं ते निरबाह हमारा,
तुम्हरी कीरति गावौं ॥ २ ॥

चलौं दीनता ह्वै के सब ते,
नाहिं बिबाद बढ़ावौं ।
जो कोइ कीन* जानि है मोहीं,
तेहि का दूरि बहावौं ॥ ३ ॥
आदि अन्त का आहौं संगी,
त्यागि न अन्तै धावौं ।
जब तुम खुसी सुचित्त होत हौं,
तब मैं सुरति मिलावौं ॥ ४ ॥
अपने अपने रँग रस माते,
केहि केहि राह लगावौं ।
जगजीवन गुरु चरनन परि कै,
नाहीं सीस उठावौं ॥ ५ ॥

॥ शब्द १९ ॥

साईं इतनी बिनती मोरि ।
माँगत हौं कर जोरि कै तुम ते,
लागि रहै दृढ़ डोरि ॥ १ ॥
रह्यों अजान नहीं मैं जान्यो,
बहुत हीन मति थोरि ।
जब ते कृपा करि आपन जान्यो,
तब ते सकौं का तोरि ॥ २ ॥

---

*द्रोही ।

अब उसवास* न एकौ मानौं,
चाखि नाम रस घोरि।
सदा भरोसा आस तुम्हारी,
भर्म फंद ते तोरि ॥ ३ ॥
चरन ते सीस टरै नहिं टारे,
दीजै हमहिं न खोरि।
जगजिवन दास तुम्हार कहावै,
सतसंगति गहि पोढ़ि ॥ ४ ॥

॥ शब्द २० ॥

अब मोर मनुवां समुझि डेरात।
वहि दिन का मोहिं संसा व्यापत,
कछु गति जानि न जात ॥ १ ॥
काम न आइहि कोउ काहू के,
नारि बंधु पितु मात।
धोखा देखि सबै कोउ भूला,
थिर नाहीं सब जात ॥ २ ॥
जन्म पाइ जो जानै नाहीं,
कौनि कहाँ कुसलात।
जगजीवन साईं तुम तारहु,
तुमहिं हाथ सब बात ॥ ३ ॥

*संसय।

॥ शब्द २ ॥१

अब सुनि लीजै इतनी हमारो।
लागी रहै प्रीति निसि बासर
दास को अपने नाहिं बिसारो ॥ १ ॥
जो मैं चहौं कहि कहँ लौ सुनावों,
औगुन कर्म बहुत अधिकारो।
सरन चरन की राखि आपनी,
यहु कछु मन में नाहिं बिचारो ॥ २ ॥
काया यहि कर्महिं की आहै,
आपु ते माहीं जात सँवारो।
भौसागर हित जानि बूड़ जग,
जेहिं जान्यो तेहिं लियो उबारो ॥ ३ ॥
लीजे राखि भाखि कहौं तुम ते,
केतिक बात लियो अनगन* तारो।
जगजीवन के साईं समरथ,
अपने निकट ते कबहुं न टारो ॥ ४ ॥

॥ शब्द २२ ॥

साईं मैं नहिं आप का चीन्हा।
को मैं आहुँ कहाँ ते आयो,
तुम हीं सब कछु कीन्हा ॥ १ ॥

*अनगिनत।

बिंदम बुंद बनायो जामा,
सो पहिराइ के दीन्हा ।
रहि दस मास अगिन महँ बासा,
तहँ तुम रच्छा कीन्हा ॥ २ ॥
बाहर होत पियत पय बिसर्यो,
वह सुधि सब हरि लीन्हा ।
बाल तरुन फिर बृद्ध भये जब,
तबहुँ बिचार न कीन्हा ॥ ३ ॥
अब दाया करि दास जानि के,
आपन करि के लीन्हा ।
जगजीवन निरगुन छबि देखै,
चरन कमल चित दीन्हा ॥ ४ ॥

॥ शब्द २३ ॥

तुम सों मन लागो है मोरा ।
हम तुम बैठे रही अटरिया
भला बना है जोरा ।॥ १ ॥
सत की सेज बिछाय सूति रहि,
सुख आनन्द घनेरा ।
करता हरता तुमहीं आहहु,
करौं मैं कौन निहोरा ॥ २ ॥

रह्यौं अजान अब जानि पस्यो है,
जब चितयो एक कोरा।
अब निर्बाह किये बनि आइहि,
लाय प्रीति नहिं तोरिय डोरा॥ ३॥
आवा गमन निवारहु साईं,
आदि अंत का आहिउ चोरा।
जगजीवन बिनती करि माँगै,
देखत दरस सदा रहौं तोरा॥ ४॥

॥ शब्द २४॥

साँई मोहिं ते सुमिर न जाई।
पाँच अपरबल जोर अहैं एइ,
इन ते कछु न बिसाई॥ १॥
निसि बासर कल देहि नहीं एइ,
मोहिं औरै राह लगाई।
जो मैं चहौं गहौं तुव चरना,
इन छिन छिन भरमाई॥ २॥
साथ सहेली लिहे पचीसौं,
अपन अपन प्रभुताई।
जो मन आवै सोई ठानैं,
हठ हटकि देहिं भटकाई॥ ३॥

महल माँ टहल करै नहिं पावा'
केहि बिधि आवहुँ धाई ।
ऊंचे चढ़त आनि कै रोकत,
मानहिं नहीं दोहाई ॥ ४ ॥
अब करु दाया जानि आपना,
बिनय कै कहौं सुनाई ।
जगजीवन कै इतनी बिनती,
तुम सब लेहु बनाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

साईं मैं तो बड़ा अनारी ।
कुमति प्रसंग बास नर्कहिं मा,
आवत नाहिं बिचारी ॥ १ ॥
पर्‌यो अपरबल महा मोह महँ,
सुधि वह नाहिं सँभारी ।
गुन नाहीं औगुन सब बहु बिधि,
बिसरी सुरति हमारी ॥ २ ॥
केतौ करि उपाय मैं थाक्यों,
मैं मन मान्यों हारी ।
अब दाया करि चरन लाइ कै,
निकट ते कबहुं न टारी ॥ ३ ॥

देहु सिखाइ पढ़ाइ ज्ञान मोहिं,
करहु योग अधिकारी ।
जगजीवन को चरन तुम्हारे,
सुरति रहौं निहारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द २६ ॥

साईं कुदरति अजब तुम्हारी ।
तुम हहु अजब अजब हैं बंदे,
मैं तुम्हरी बलिहारी ॥ १ ॥
दुनिया अजब धंध मा लागी,
सुधि बुधि नाहिं सँभारी ।
आये फूटि टूटि गारत भे,
का सों कहौं पुकारी ॥ २ ॥
समुझै बूझै सूझै नाहीं,
शब्द कही कहि हारी ।
सो अँदेस होत मन मोरे,
का धौं करहि बिचारी ॥ ३ ॥
आये कहँ ते फिरि कहँ जैहैं,
कहँ ग्रह ग्राम सँवारी ।
भूले फिरहिं मोह मद माते,
इहँ रहहिं दिन दुइ चारी ॥ ४ ॥

जेहिं अपनाइ कै चेत चितायो,
तिन सत सुरति सँभारी ।
जगजीवन मूरति मा मिलि गे,
नैन सों निरखि निहारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २७ ॥

सतगुरु समरथ साहब चरनन पर वारी ॥ टेक ॥
हौं अज्ञान बुद्धिहीन सुद्धि ना संभारी ।
कर दोऊ तन सीस दीन्ह्यो गोद हौं तुम्हारी ॥१॥
राखिये अब सरन अपनी कर्म ना बिचारी ।
नेग* जन्म भर्मके रे डारिये मिटा री ॥ २ ॥
हौं तुम्हार आदि अन्त देहु ना बिसारी ।
ऐसी भाँति दिनं राति चित्त ते न टारी ॥ ३ ॥
बिनय करि कै कहत हौं सुनि लीजिये हमारी ।
जगजीवन का और ना पनाह है तुम्हारी ॥४॥

॥ शब्द २८ ॥

बालक बुद्धि हीन मति मोरी ।
भरमत फिरौं नाहिं दृढ़ डोरी ॥ १ ॥
सूरति राखौ चरनन मोरी ।
लागि रहै कबहूं नाहिं तोरी ॥ २ ॥
निरखत रहौं जाउँ बलिहारी ।
दास आनि कै नाहिं बिसारी ॥ ३ ॥

*अनेक ।

तुमहिं सिखाय पढ़ायो ज्ञाना ।
तब मैं धर्यौं चरन का ध्याना ॥ ४ ॥
साईं समरथ तुम हौ मोरे ।
बिनती करौं ठाढ़ कर जोरे ॥ ५ ॥
अब दयाल हूँ दाया कीजे ।
अपने जन कह दरसन दीजै ॥ ६ ॥
नाम तुम्हार मोहिं है प्यारा ।
साइ भजे घट भा उजियारा ॥ ७ ॥
जगजीवन चरनन दियो माथ ।
साहब समरथ करहु सनाथ ॥ ८ ॥

॥ शब्द २९ ॥

तेरा नाम सुमिरि ना जाय ।
नहीं बस कछु मोर आहै, करहुं कौन उपाय ॥ १ ॥
जबहिं चाहत हितू करि कै, लेत चरनन लाय ।
बिसरि जब मन जात आहै, देत सब बिसराय ॥ २ ॥
अजब ख्याल अपार लीला, अंत काहु न पाय ।
जीव जंत पतंग जग महँ, काहु ना बिलगाय ॥ ३ ॥
करौं बिनती जोरि दुउ कर, कहत अहौं सुनाय ।
जगजीवन गुरु चरन सरनं, है तुम्हार कहाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३० ॥

मैं तो अरज करौं दरबार ।
भौसागर तकि भरम होत मोहिं,
अब की उतारहु पार ॥ १ ॥
औगुन बहुत नहीं गुन एकौ,
काम करत बिन कार ।
पग बिहान कर नाहीं जिन के,
ताहि खवावत चार ॥ २ ॥
बुद्धि हीन सुधि हीन अहौं मैं,
का करि सकौं बिचार ।
अहौं भरोसे सदा तुम्हारे,
तुम प्रति पालनहार ॥ ३ ॥
सुनियत ग्रंथ पुरान कहत अस,
बहुतन करि निस्तार ।
छिनहिं निहाल किहेउ प्रभु बहुतन,
द्विज के दारिद मार ॥ ४ ॥
अब दाया करिये प्रभु इतनी,
आवै मोहिं इतबार ।
जगजीवन चरनन परि बिनवै,
मन ना बहै हमार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

हम तें चूक परत बहुतेरी ।
मैं तौ दास अहौं चरनन का, हम हूं तन हरि हेरी ॥१॥
बाल-ज्ञान प्रभु अहै हमारा, झूठ साँच बहुतेरी ।
सो औगुन गुन का कहौं तुम तें, भौसागर तें निबेरी ।२।
भव तें भागि आयौं तुव सरनै, कहत अहौं अस टेरी ।
जगजीवन की बिनती सुनिये, राखौ पत जन केरी ।३।

॥ शब्द ३२ ॥

अब तुम होहु दयाल तुम्हारी पैयाँ परौं ॥टेक॥
सूझत नहिं मैं भ्रमत फिरत हौं,
परयों मोह के जाल ॥ १ ॥
नाम तुम्हार सुमिरि नहिं आवै,
जग संगति जंजाल ॥ २ ॥
आवत जब सुधि वहै समय की,
ब्याकुल होहुं बेहाल ॥ ३ ॥
हाथ पाँव मेरे बल नाहीं है,
तुम हिं करहु प्रतिपाल ॥ ४ ॥
जगजीवन काँ दरसन दीजै,
अब मोहिं करहु निहाल ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

बार बार कहि बिनय सुनावौं ।
तुम्हरी कृपा तें सुरति लगावौं ॥ १ ॥
अनत न जाउँ जाउँ बलिहारी ।
सूरति कबहूं रहै न न्यारी ॥ २ ॥
जब तुम चहहु रहौं तब पासा ।
कृपा करहु तब बसि बिस्वासा ॥ ३ ॥
दास केर बस एकौ नाहीं ।
तुम जानौ जानै मन माहीं ॥ ४ ॥
जब तुम जन का देत जनाई ।
तब मन भजत अहै लौ लाई ॥ ५ ॥
दूजा कौन है काहि बतावैं ।
कृपा करहु तब ना बिसरावौं ॥ ६ ॥
जगजीवन कहै विनय सुनाई ।
सतगुरु चरन बिसरि नहिं जाई ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३४ ॥

साईं को गति गावै तेरी ।
जेहि जस ज्ञान बयान कीन्ह तस,
सूरत बास बसे री ॥ १ ॥
ब्रह्मा सनक सनंदन सत्ती,
संकर सहस फने री ।
बिस्नु सत्य रस चाखि मस्त ह्वै,
गावत ज्ञान घनेरी ॥ २ ॥

अंत अनंत ध्यान तेहि कीन्हे,
भे सतलोक बसेरी ।
नाम अधार बिचारत ज्यों जग,
सन्मुख पलक न फेरी ॥ ३ ॥
जेहि हित जानि दया दुख काटयौ,
भौजल धार निवेरी ।
जगजीवन बिस्वास तुम्हारी,
टूटी भ्रम की बेरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

चरन सरन अब आयौं मैं नहिं जानी रे । ॥टेक॥
मैं अजान अज्ञान हूँ, कछु सुधि न सँभारो रे ।
अंध रह्यों सूझा नहीं, भूल्यों संसारी रे ॥१॥
पाँच भ्रमत जहँ तहँ, एक नहिं आयो रे ।
मोरि लागु नहिं अहै, ता ते बिसरायो रे ॥२॥
मिलि पचीस तेहि सँग, मोहिं बहुरि दिखायो रे ।
नाचि नाचि मोहिं लियो, नाम नहिं आयो रे ॥३॥
मैं तौ मद माता फिर्यों, चित ठहर न आना रे ।
भा गुमान रस पाय तेहिं, सुधि बुधि हैवाना रे ॥४॥
कठिन जार भ्रम फाँसि है जग, बँधा संसारा रे ।
जेहि का तुम दाया करी, तेहि भयो उबारा रे ॥५॥

न्यारे तुम्हरे दास भे, लिप्त नहिं काहू माहीं रे।
जगत कहै हम महँ अहैं, वै तुमहीं माहीं रे॥
औगुन क्रम सब मेटिये, सुनु कृपा-निधाना रे।
जगजीवन दास तुम्हार है, चरनन लिपटाना रे॥

॥ शब्द ३६ ॥

बिनती सुनिये कृपा-निधान।
जानत अहौ जनावत तुमहीं, का करि सकौं बयान।१।
खात पियत जो डोलत बोलत, और न दूसर आन।
ब्यापि रह्यो कहुं चेत सरन करि, काहू भरम भुलान।२।
माया प्रबल अंत कछु नाहीं, सो मन समुझि डरान।
अब तो सरन और ना जानौं, करिहैं सो परमान।३।
सुद्धि बुद्धि कछु नाहीं मोरे, बालक जैसे अजान।
मात सुतहि प्रतिपाल करत है, राखत हित करि प्रान।४।
मैं केतानि कवनि गिनती महँ, गावत बेद पुरान।
जगजीवन का आपन जानहु, चरन रहे लिपटान।५।

॥ शब्द ३७ ॥

सांईं मैं तुम्हरी बलिहारी।
कहौं काह कहि आवत नाहीं, मन तन तुम पर वारी।१।
देखत अहौं खरो नाम्रोवर*, झलकै जोति तुम्हारी।
केहु भरमाय देत माया महँ, केहु करत हितकारी।२।

*तांबा की तरह यानी लाल रंग।

देखत अहहूं खेलत सब महँ को करि सकै बिचारी
करता हरता तुम हीं आही अजब बनी फुलवारी ॥३॥
दासन दास कै मोहिं जानिये जानत अही हमारी ।
जगजीवन दियो सीस चरन तर
कबहूं नाहिं बिसारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

सांईं मैं अजान अज्ञाना ।
जानों नहीं बूझि नहिं आवै भरमत फिरौं भुलाना ॥१॥
हौ समरत्थ सिद्धि के दाता मोहिं सिखावहु ज्ञाना ।
करौं सो जानि जनाय देव जब धरौं चरन कै ध्याना ॥२॥
दीन लीन सुभ सुमन सुमारग यह वर दीजै दाना ।
आवै दृष्टि दिष्ट देखत रहौं परगट करौं बयाना ॥३॥
काहूं* रहौं सरन नहिं छूटै तुम तजि भजौं न आना ।
जगजीवन कर जोरि कहै यह निरखत
रहौं निरबाना ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

अब मैं कासों कहौं सुनाई ।
केहू घट की छापी नाहीं, जोति रही सब छाई ॥१॥
तुम हीं ब्रह्मा तुम हीं बिस्नू, संभू तुमहिं कहाई ।
सक्ती सेस गनेस तुम्हीं हौ, दूजा नहिं कहि जाई ॥२॥

---

* कहीं ।

आसा सब महँ अहै तुम्हारो, नहीं कहूं बहराई*
जानि ऐसी परत मोहिं का, चरन सरन महँ आई ॥३॥
दुक्ख दे फिर दुक्ख मेटत, सुक्ख देत अधिकाई ।
दास आपन जानौ जिन का, तिन के रहौ सहाई ॥४॥
तुम हीं करता तुम हीं हरता, सृष्टी तुमहिं बनाई ।
जगजीवन के सत्त गुरू तुम, कौन कहै गोहराई ॥५॥

॥ शब्द ४० ॥

मेरे गुनाह माफ करिये अब साईं ॥टेक॥
जैसे मातु सुतहिं पालत छीर दै पियाई ।
लिये गोद रहै निसु दिन कबहुं ना घिनाई ॥१॥
रहै सुखित दुक्ख नाहिं कर ते ले उठाई ।
कंठ लावै मुक्ख चूमै हुलसि के हँसाई ॥२॥
सुतहिं दुक्ख दुखित मातु कछु ना सुहाई ।
इहै मोर बिनती जानु राखु ऐसी नाईं ॥३॥
पतित अनेक तारि लीन्हे गनत ना सिराई ।
मेटि औगुन छिनक माहिं लयो है अपनाई ॥४॥
सुने ते बिस्वास आवत बेद सब्द गाई ।
सूझि सत मत परा जबहीं दियो तबहिं लखाई ॥५॥
बुद्धि केतनि अहै मोहिं मां करौं का कबिताई ।
जगजीवन का करहु आपन चरनन में लिपटाई ॥६॥

*बाहर ।

॥ शब्द ४१ ॥

अब मैं करौं धौं कौन उपाई ।

मैं चाहौं निस बासर सुमिरौं,तुम डारत बिसराई ॥१॥
तुम जब जानत तब मैं जानत,तब हीं मोहिं सुधि आई।
सूझत बूझत जानि परै तब,रहत हौं सुरति लगाई॥२॥
है केतनि मति कहौं कहां लहि, तुम ते कहा छिपाई ।
जल थल घट घट सबके मन महँ,जहँतहँ रह्यो समाई॥३॥
ब्रह्मा सिव औ बिस्नु के राचित, वहि मन रह्यो समाई।
जगजीवन जब कृपा तुम्हारी,चरन रह्यो लिपटाई॥४॥

॥ शब्द ४२ ॥

नैना चरनन राखहुं लाय ।

केतो रूप अनूपम आहै, देऊं सब बिसराय ॥१॥
राति दिना औ सोवत जागत, मोहीं इहै सोहाय ॥
नहीं पल पल तजौं कबहूं, अनत* नाहीं जाय ॥२
मोरि बस कछु नाहिं है, जब देत तुमहिं बहाय ।
चहत खैंचि कै ऐंचि राखत, रहत हौं ठहराय ॥३॥
दियो नाथ सनाथ करि अब, कहत अहौं सुनाय ।
जगीजवन के सत्त गुरु तुम,सदा रहहु सहाय ॥४॥

॥ शब्द ४३ ॥

भइउँ मैं सनाथ आइ कै ॥टेक॥
महा मोह सोवत रहिउँ ।
उठिउँ चौंकि जागि कै ॥१॥

*और कहीं ।

मोहिं उपदेस दियो मते महँ ।
चरन कमल रहिउँ लागि कै ॥२॥
जग को देखि मोहिं डरु लाग्यो ।
आइउँ सरन में भागि कै ॥३॥
जगजीवन छबि निरखि देखि रहि ।
मस्त भइउँ रस पागि कै ॥४॥

॥ शब्द ४४ ॥

साईं मोहिं और न भावै ।
जो मैं चहौं रहौं चरनन ढिग, जगत भेख भरमावै ॥१॥
कानि न मानत जानत आहै, नहिं बिबेक मन आवै ।
जेहिं के मन मां जैसी आवत, सो तैसे गुन गावै ॥२॥
अद्भुत ख्याल तुम्हारे आहैं, बिन कर नाच नचावै ।
कहुं उपदेस अँदेस मिटावै, केहूं दूरि बहावै ॥३॥
अब सरनाय चरन की राखौ, सूरति नहिं भरमावै ।
जगजीवन जो बूझै जैसे, तेहि का तैसे भावै ॥४॥

॥ शब्द ४५ ॥

प्रभु जी बक्सहु चूकि हमारी ।
जो पुरबुज अपने कर्मन ते, डारयो सर्ब मिटा री ॥१॥
राखहु पास सदा चरनन के, निकट ते नाहीं टारी ।
जानत रहहु सदा हित आपन, कबहूं नाहिं बिसारी ॥२॥

पाँच पचीस बड़े पर पंची, यह डारत संसारी ।
येई पल छिन छिनहिं भ्रमावत, नाहीं लागु हमारी ॥३॥
अब मन लागि पागि रह तुम ते, सूरति रहै न न्यारी ।
जगजीवन को भक्ति बर दीजै, जुग जुग आस तुम्हारी ॥४॥

॥ शब्द ४६ ॥

अब मैं कहौं कहां लगि ज्ञान ।
सहस मुख सों सेस बरनत, मैं अहौं केतान ॥१॥
बिस्नु सुमिरत सिवं सक्ती, ब्रह्म बेद बखान ।
सर्ब मईं बिराज रही है, जोति वह निर्बान ॥२॥
चहौ सो करि लेहु पल में, अहै सो न प्रमान ।
कृपा करि जेहिं लियो छिन में, जानि आपु समान ॥३॥
करौं बिनती बहुत बिधि ते, हौं अजान हैवान ।
जगजीवन गुरु अहै समरथ, चरन हौं लिपटान ॥४॥

॥ शब्द ४७ ॥

प्रभु तुम सों मन लागा मोरा ।
नेग* जन्म के कर्म काटो, माँगौं दरसन तोरा ॥१॥
मोहिं ते तौ कछु कहि नहिं आवै, मैं पापी हौं चोरा ।
निसु दिन तुम कहँ सुमिरत राहौं, इतना मानु निहोरा ॥२॥
यह अरदास† मानि ले साईं, तनिक देखिये कोरा ।
जगजीवन काँ जानु आपना, तोरु प्रीत नहिं छोरा ॥३॥

*अनेक । †अरज़दाश्त, प्रार्थना ।

॥ शब्द ४८ ॥

मेरी बिनय सुनिये राम ।

भरमत हौं दिन रात छिन छिन, कैसे सुमिरौं नाम॥१॥

महा अहै अपार माया, मोह सुख परि काम ।

छूटि गे सत टूटि डोरी, लागि हित धन धाम ॥२॥

मेटु सर्ब गुनाह मेरे, पाप कर्म हराम ।

जगजीवन काँ जानु आपन, चरन केर गुलाम ॥३॥

॥ शब्द ४९ ॥

पर्‍यौं मैं जार* कैसे जानौं रे ।

जो तुम कौल कीन तब हमते, अब कैसे सुधि आनौं रे।।१॥

निस बासर मैं भ्रमत फिरत रहि, केहि बिधि मन थिर आनौं रे ।

दे उपदेस अँदेस मिटावो, तौन ठान मैं ठानौं रे ॥२॥

लागि रहै मोहिं टूटै नाहीं, माँगि माँगि रस सानौं रे

जगजीवन बिनती करि माँगै, चरन कमल अनुरागौँ रे ॥३॥

॥ शब्द ५० ॥

सांई मेरे हम हैं दास तुम्हारे ।

तूम्हरी कृपा ते सुमिरौं निसु दिन, कबहूं न रहौं बिसारे ॥१॥

लागी रहै प्रीति चरनन ते, होउँ न कबहूं न्यारे ।

नहिं बसि अहै मोर बपुरे† को, रहिये आपु सँभारे॥२॥

---

*जाल । †गरीब ।

बालक बुद्धि अजान जान नहिं, जननी केर दुलारे।
खेलत सुभ औ असुभ न जानत, हितकरिगोद लिया रे॥३
अस्थन लाग पियत पय हित करि, नहीं कुदृष्टि निहारे।
सुनिय कहौं कर जोरि मोरि यह, बिनय सोंकरौं पुकारे॥४
छबि मूरति निरखत देखत रहैं, नाहीं और निहारे।
जगजीवन काँ आपन जानहु, औगुन सर्ब मिटारे॥५

॥ शब्द ५१ ॥

साईं मैं नहिं आपु क जाना।
को मैं आहुं कहाँ ते आयों, फिरत हैं कहाँ भुलाना॥१॥
काया कंचन लोक बनायो, तेहि का अंत न जाना।
बूझौं कहँ अस्थान कौन है, सर्ब अंग ठहराना॥२॥
देखत हैं काहू नहिं न्यारा, समुझत आहौं ज्ञाना।
कौन जुक्ति जग बंध निकरिये, कैसे ह्वै मस्ताना॥३॥
मैं जानौं मन तुम हीं साहब, ता ते मन बिलगाना।
तेहिका रूप अनूप अमूरति, गगन मँडल अस्थाना॥४॥
तेहि ते सूरति फूटी तेहि माँ, गुरू अलख करि माना।
चेला ह्वै कै करहुं बंदगी, सीस करहुं कुरबाना॥५॥
तुम ते मैं संतुष्टा ह्वै हौं, अहहु मूर्ति निर्बाना।
जगजीवन पर दाया कीन्हो तब ते अब पहिचाना॥६॥

॥ शब्द ५२ ॥

मोहिं का बार बार भटकायो।
भूला फिरयौं अनेक जन्म लहि, अंत जानि नहिं पायो॥१

काया धरि धरि नाच्यौं बहु बिधि, आसा बँधि बिसरायो।
जो सुधि रही सुक्ख हरि मोरी, चेत नहीं कछु आयो ॥२
आवत सुधि मोहिं कबहूं कबहूं, साँचु मैं नाहीं पायो।
थिर मांहिं बास भई नहिं काहूं, अवत जात दुख पायो॥३
करि करुना अघ करम मिटायो, अपनि सरन लै आयो।
जगजीवन अब संसै नाहीं, चरनन सीस चढ़ायो ॥४

॥ शब्द ५३ ॥

साँईं यह बिनती सुनु मोरी ॥ टेक ॥

जन्म पाइ कछु जान्यों नाहीं, कछु बसि नाहीं मोरी ।
बाद बिबाद निंदा कुटिलाई, यह सब मोहिं माँखोरी॥१
औगुन अपने कहँ लौं भाखौं, गनिन सिराय* बहु कोरी।
महा मोह भव जाल में बंधो, दाया करि कै छोरी ॥२।
माय सुतहिं दुख देत न कबहूं, नहिं कुदृष्टि करि हेरी।
जगजीवन काँ आपन जानहु, प्रीति न कबहूं तोरी ॥३

॥ शब्द ५४ ॥

मेरी हाथ तुम्हारे डोरी ॥ टेक ॥

है केतनि मति बुद्धि हीन है ।
नहिं कछु अहै बूझ मति मोरी ॥१॥
मन कठोर आभाव भाव नहिं ।
करौं कपट भ्रमि भटकौं चोरी ॥२॥
निसु बासर छिन छिन बिसरत है ।
नहिं निरखि जात छबि तोरी ॥३॥

---

*पार पावै ।

राखहु पास बिस्वास देहु बर, बिनय कहौं कर जोरी ।
जगजीवन चित चरनन दीन्हे, रहै सीस कर जोरी ॥४॥

॥ शब्द ५५ ॥

साँईं नावों तोहिं काँ माथ ।
सत्त गुरु समरत्थ साँई, जनहिं करहु सनाथ ॥ १॥
सत्त संगं रंग मोहिं मन, जुग बंध अंतर सोय ।
निरखि देखहुं नैन ते छबि, रही सुरति समोय ॥२॥
जलं थलं औ पवन पानी, ब्यापितं है सोय ।
ब्रह्म बिस्नु महेस सेसं, एक दूज न कोय ॥ ॥३॥ ।
जक्त संगति रहैं न्यारे, दास ते जग माहिं ।
कमल मधुकर प्रीति संपुट*, बिलग होवैं नाहिं ॥४॥
रहि निरासं नाम आसं, चित्त चरन समाय ।
जगीजवन बिस्वास मन, सो मुरति दरस कराय ॥५॥

॥ शब्द ५६ ॥

प्रभु जी बसि हमार कछु नाहीं ।
जो तुम चहत करत है। सोई, ब्यापि रह्यो सब माहीं ॥१॥
कहुं कबिज्ञानी ज्ञान कथत हौ, कहुं पंडित बेद कहानी।
कहूं कुमति कहुं सुमति बिराजत, केहु गति नाहीं जानी॥
कहूं चोर कहुं साह कहावत, कहुं अदत्त कहुं दानी।
कहुं हरि लेत देत पल छिन माँ, आहै अकथ कहानी।३।

*भँवरा को कंवल से ऐसी प्रीत है कि जब वह उस पर बैठा को ई सुध बुध नहीं रहती यहाँ तक कि साँझ को जब कँवल बटुर कर संपुट हो जाता है तो भँवरा उसी के भीतर बंद होजाता है ।

कहूं दैत्त कहुं अहौ देवता, कहुं बिबाद रचि ठानी ।
कहुं रच्छा कहुं बद्ध करत हौ, केहू करत प्रधानी ॥४॥
माया प्रबल नचावत नाचत, निर्मल जोत निर्बानी ।
जगजीवन केसतगुरु साहब, चरन सुरति लिपटानो॥५॥

॥ शब्द ५७ ॥

साहब तुम केते अधम उधारी ।
अजब रीझ तुम्हारि आहै, करि को सकै बिचारी॥१॥
पतित अनंत गनै को कहँ लौं, लीन्ह्यो छिन महँ तारी।
मैं कह कहौं बरनि नहिं आवै, बेद पुरान पुकारी॥२॥
जेहि काँ आपन हित कर जान्यो, दीन्ह्यो सुख अधिका री ।
जब जब संकट पर्यो भक्त कहँ, लीन्ह्यो ताहि उबारी।३।
जिन केहु गरब कीन भक्तन ते, तिन का गरब निवारी ।
निकटहिं बसत अहहु अंतर महँ, रहत जोत नहिं न्यारी ॥ ४ ॥
कहौं कर जोरि लेहु सुन मोरी, हमरे टेक तुम्हारी ।
जगजीवन गुरु चरन तुम्हारे, कबहुं न रहौं बिसारी।।५

॥ शब्द ५८ ॥

साईं मोहिं भरोस तुम्हारा ।
मोरे बस नहिं अहै एकौ, तुमहिं करो निस्तारा॥१॥
मैं अज्ञान बुद्धि है नाहीं, का करि सकौं बिचारा ।
जब तुम लेत पढ़ाय सिखावत, तब मैं प्रगट पुकारा॥२॥

बहुतक भवसागर महँ बूड़त, तेहि उबारि कै तारा ।
बहुतन का जब कष्ट भयो है, तिन कै कष्ट निवारा ॥३॥
अब तो चरन कि सरनहिं आयों, गह्यों मैं
पच्छ तुम्हारा ।
जगजीवन के साँईं समरथ, मोहिं बल अहै तुम्हारा ॥४॥

॥ शब्द ५९ ॥

साँईं चहहु करहु सो होई ।
जस चाहो तस नाच नचावो,
काह करै जग कोई ॥१॥
पैदा करत निपैद करत हो,
दै हरि लेत हो सोई ।
केहु धन माया बिदित देत हो,
फिर छिन डारत खोई ॥२॥
केहु हूँ दीनं लीन सुमति ते,
अंतर ध्यान चरन रह टोई ।
कोई मरै बहै अपंथ महँ,
भे अनाथ नर लोई ॥३॥
अब बिस्वास आस है तुम्हरी
तकौं चरित कहि जात न कोई ।
जगजीवन का आपन जानहु,
सूरति राखौ छबिहिँ समोई ॥४॥

॥ शब्द ६० ॥

काह कहौं कहि आवत नाहीं,
मन तन तुम पर वारी ॥टेक॥
देखत अहौं दूसरो नाहीं, एकै जोति तुम्हारी ।
केहु भरमाय देत माया महँ, केहु करत हितकारी॥१॥
देखत आहौं खेलत सब महँ, को करि सकै बिचारी।
करता हरता तुमहीं आहौ, अजब बनी फुलवारी॥२॥
दासन दासा मोहिं जानिये, जानत अहौ हमारी ।
जगजीवन दास सीस दियो चरनन, कबहूं
नाहिं बिसारी ॥३॥

॥ शब्द ६१ ॥

आरति करौं सुनो मेरे प्यारे,
तुम गुनाह के मेटनहारे ॥ टेक ॥
बुद्धि हीन कछु गति नहिं जानौं,
कृपा करहु तव नाम बखानौं ॥१॥
सेस महेस ब्रह्म धर ध्याना,
वेहू नाहिं करि सकैं बखाना ॥२॥
अंत न खोज अगाध को गावै,
जेहि जस चह तस ध्यान लगावै ॥३॥
जगीजवन के बस कछु नाहीं,
दाया चरन बसहिं मन माहीं ॥४॥

॥ शब्द ६२ ॥

प्रभु जी चहौ सो तुम करहु ।
होय तुरत बिलंब नाहीं, जौन इच्छा धरहु ॥१॥
चहहु सुमेरहि करहु किनका, कन सुमेरहि करहु ।
अहै सबै बनाव तुम्हरा, गिरहिं अधरै* धरहु ॥२॥
तीन लोक बनाउ चौथा, चहहु बिन कर मलहु ।
चहहु देहु बढ़ाइ दै कर, चहहु तौ फिर लरहु ॥३॥
चहहु पाल जियाइ करि कै, चहहु छिन महँ मरहु† ।
जगजीवन के सत्त गुरु तुम, बास गगनहिं करहु ॥४॥

॥ शब्द ६३ ॥

साईं कठिन भक्ति है तेरी ।
जिन काहू का सुमिरन आवा, जब किरपा भै तेरी ॥१॥
नहीं कबूलौ परत बंदगी, केतो कहत हौं टेरी ।
जिन काँ चहा लहा पै तिन हीं, मिट्यो भरम तेहि केरी ॥२॥
माला मुद्रा तिलक दिहे हैं, करि उपाय बहुतेरी ।
बैठि तपस्या करि जंगल माँ, ह्वै रह खाक कि ढेरी ॥३॥
मते मंत्र जेहि काँ कहि दीन्ह्यो, भै सुधि सत्य घनेरी ।
जगजीवन सतगुरु मिलि उतरे, बहुरि करहिं
नहिं फेरी ॥४॥

---

*आसमान । †मारो ।

॥ शब्द ६४ ॥

साहब अजब कुदरत तोर।
देखि गति कहि जात नाहीं, केतिक मति है मोर॥१॥
नचत सब कोउ काछि नाचा, भ्रमत फिर बिन डोर।
होत औगुन आप ते, सब देत साहब खोर* ॥ २ ॥
कौल कै जग पठै दीन्ह्यो, तौन डार्‌यो तोर।
करत कपट संत तेती, कहैं मोरी मोर॥ ३॥
ऐसि जग की रीति आहै, कहा कहिये टेर।
जगजीवन दास चरन गुरू के, सुरत करिये पोढ़ ॥४॥

॥ चेतावनी ॥

॥ शब्द १ ॥

अरे मन देहु तजि मतवारि।
जे जे आये जगत महँ एहि, गये ते ते हारि॥ १ ॥
नहीं सुमिर्‌यौ नाम काँ, सब गयो काम बिगारि॥
आपु काँ जिन बड़ा जान्यो, काल खायो मारि॥ २॥
जानि आपुहिं छोट जग, रहि रहौ डोरि सँभारि।
बैठि कै चौगान निरखहु, रूप छबि अनुहारि† ॥३॥
रहौ थिर सतसंग बासी, देहु सकल बिसारि।
जगजिवन सतगुरु कृपा करि कै, लेहैं सबै सँवारि॥४॥

॥ शब्द २ ॥

अरे मन समुझ करु पहिचान।
को तैं अहसि कहाँ ते आयसि, काहे भर्म भुलान ॥१॥

*दोष। †देखकर।

सुधि सँभार बिचार करिकै, बूझु पाछिल ज्ञान।
नाचु एहि दुइ चारि दिन का, अचल नहिं अस्थान॥२॥
लोक गढ़ एहु कोट काया, कठिन माया बान।
लाग सब कें बचे कोउ नहिं, हस्यो सब का ध्यान॥३॥
खबरदार बेखबर हो नहिं, ओट नाम निर्बान।
जगजिवन सतगुरु राखि लेहैं, चरन रहु लिपटान॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

अरे नर का एहिं तकि बौराना।
सुख परि कौल कीन तेहिं त्यागी,
मन माना मन जाना॥१॥
चला जात कोउ अचल नहीं है,
अबहूं समझ हैवाना।
धोखा है तकि भूल फूल नहिं,
होइहि सबै बिराना॥२॥
दिन दुइ चार की संगत सब की,
ह्वैहै अंत चलाना।
एत दिन रहि इतर भ्रम भीतर,
बिना भजन पछिताना॥३॥
लेहु बचाय नचाय नाम गहि,
कहौं नियाये ज्ञाना।
जगजीवन सब वृथा जानि कै,
धरहु चरन कर ध्याना॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

मनुवाँ ऐसी प्रीति लगाव ।
ससि रूप जैसे चकोर निरखत, ऐसे चित्त मिलाव॥१॥
सूम के हित दाम ज्यौं नित, नेम कौड़ी भाव ।
अस लागि रहु रस पागि दुनियाँ, धंध सब बिसराव।२।
जुवा कामी रतै कामिनि, रैन दिन भरमाव ।
अस रहै लागी नहीं भूलै, दूरि दुबिधा भाव ॥३॥
बहुत सुत हित बाँझनी के, बसत हिरदय ठावँ ।
जगजिवन गुरु के चरन गहि रहु, भक्ति को अस नावँ।४।

॥ शब्द ५ ॥

मन तैं काहे का करत गुमान ।
रहहु अधीन नाम वह सुमिरहु, तोहिं सिखावौं ज्ञान।१।
आये जे जे फूलि भूलि गे फिर पाछे पछितान ।
फिरि तौ कोई काम न आवा, ह्वै गा जबै चलान।२।
जो आवा सो खाकहिं मिलि गा, उड़ि उड़ि खेह उड़ान।
बृथा गयो आय जग जनमें, जो पै नाहीं जान।३।
सुद्धि सँभारि सँवारि लेहु करि, अधरम करहु अड़ान।
जगजीवनगुरुचरनगहेरहु, निरगुनतकु निरबान ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

मैं तैं जग त्यागि मन चलिय सिर नाई ।
नाम जानि दीन हीन करिये दीनताई ॥ १ ॥

अहंकार गर्ब ते सब गये हैं बिलाई ।
रावन के सीस काटि राम की दोहाई ॥ २ ॥
जिन जिन गुमान कीन मारि गर्दही मिलाई ।
साधि साधि बाँधि प्रीति ताहि पर सहाई ॥३॥
परसहु गुरु सीस डारि दुनिया बिसराई ।
जगजीवन आस एक टेक रहिये लगाई ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

अरे मन देहु सबै बिसराय ।
दीन हूै लवलीन करि कै नाम रहु लै लाय ॥१॥
नाम अमृत जपहु रसना गुप्त अंतर पाय ।
मैल छूटि कै होय निर्मल सुद्धि पाछिल आय ॥२॥
निर्गुनं निहारि निरखहु अनत नाहीं जाय ।
सीस दुइ कर परहु चरनन छूटि नाहीं जाय ॥३॥
सदा रहहु सचेत हेत लगाइ नहिं बिसराय ।
जगजीवन परकास मूरति सूरति सुरति मिलाय॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

हमारा देखि करै नहिं कोई ।
जो कोइ देखि हमारा करिहै, अंत फजीहति होई।१।
जस हम चले चलै नहिं कोई, करी सो करै न सोई ।
मानै कहा कहे जो चलिहै, सिद्धि काज सब होई।२।

हम तो देह धरे जग नाचब, भेद न पाई कोई ।
हम आहन सतसंगी बासी, सूरति रही समोई ।२।
कहा पुकारि बिचारि लेहु सुनि, बृथा सब्द नहिं होई।
जगजीवन दास सहज मन सुमिरत, बिरले
यहि जग कोई ।३।

॥ शब्द ९ ॥

साधो समझौ मन ही माहीं ।
अजब तमासे हैं दुनिया के, कछु कहिबे को नाहीं।१।
अस्तुति करहिं भाव करि बहु बिधि, फिर
फिर निंदै कराहीं ।
मैं नहिं जानौ साँच कहतु हौं परिहैं नर्कहिं माहीं।२
मैं केतानि कौनि गनती महँ, कहा जात कछु नाहीं।
साहब समरथ दाया करिहैं, नाम बसत जेहि माहीं।३।
करै न निंदा मैं तैं त्यागै, दीन रहै मन माहीं ।
जगजीवन तेहि पर किरपा भै, बैठे अम्मर छाहीं॥४॥

॥ शब्द १०॥

दुनिया जानि बूझि बौरानी ।
झूठै कहै कपट चतुराई, मनहिं न आनहि कानी॥१॥
नहिं डरपत है सत्त राम कहं, ऐसे हहिं अभिमानी ।
है बिबाद निंदा कहि भाखहिं, तेही पाप ते आगे हानी ॥२॥
जानत हैं मन मानत नाहीं, बड़े कहावत ज्ञानी ।
नवहिं माहिं न साधु ते दीनता, बूड़ि मुए बिनु पानी॥३॥

मैं तैं त्यागि अंतर माँ सुमिरै, परगट कहौं बखानी।
जगजीवन साधन ते नय चलु,इहै सुक्ख कै खानी ॥४॥

॥ शब्द ११॥

साधो कहा जो मानै कोई।
जो कोइ कहा हमार मानिहै, भला ताहि कै होई।१।
तजै गरूर पूर कहि बानी, मनहिं दीनता होई।
तेहि काँ काज सिद्धि कै जानौ,सुखानंद तेहि होई।२॥
अन्तर भजु केहुं दुक्ख देइ नहिं, मैं तैं डारै खोई।
तेहि काँ राम सदा सुख दायक,सुद्धि ताहि कै लेई।३।
परगट कहत अहौं गोहराये, जग ते न्यारे वोई।
जगजीवन मूरति वह निरखा,सूरति रही समोई ॥४॥

॥ शब्द १२॥

दुनिया दुबिधा सबै परी।
जाहि केर बनाव है सब भजत नाहिं घरी ॥१॥
पाइ दौलत धाम सुख परि मेर मेर करी।
मारि कै जमदूत खूंदा सबै सुधि बिसरी ॥ २ ॥
मातु पितु सुत साथ ना कोइ चले लै पकरी।
महा दुर्गति दूत कीन्ह्यौ सबै सुद्धि हरी ॥ ३ ॥
समुझि बूझि सँभार सूरति नाम चित्त धरी।
जगजीवन ते पार उतरे नाम बल उबरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द १३॥

मनुवाँ का तकि तैं बौराना ।

झूठे जग्त तमासा आहै, सुधि करु कृपानिधाना ॥१॥

देखु बिचारि कै फूलु भूलु नहिं, साईं बहु निर्बारो ।

छिन महँ एक बुन्द ते कीन्ह्यो, जग्त सबै बिस्तारी ।२।

देखि ऐसी जुक्ति रहिये, पलक नाहीं मारि ।

जैसे ससिहिं चकोर निरखत, दियो तन मन वारि॥३॥

रहो दीन आधीन ह्वै कै, तमा* तजु कहि मारि

सांईं का तब दरद आइहि, लेहै सबै सँवारि ॥४॥

होहु थिर कहुं बहहु नाहीं, देहु दुबिधा डारि ।

जगजिवन गुरु के चरन परि कै, बिनय करैपुकारि ।५।

॥ शब्द १४॥

मन तुम काहे रसनि बिसराई ।

तब तो रसनि रही रजनी महँ, अब काहे गाफिलाई॥१।

पाँच प्रचंड संग हैं तेरे, संग पचीस लेवाई ।

इन ते ऐंचि खैंचि नहिं आवै, जहाँ तहाँ उठि धाई॥२॥

जुक्ति बाँधि करि लेहु एक करि, मैं तैं देहु छुड़ाई

चलि अस्थान जहाँ गुरु बैठे, रहहु बंदगी लाई ॥३॥

देखत रहहु दृष्टि नहिं टारहु, निर्मल जोति निरथाई।

जगजीवन सतगुरु के चरन गहि, रहिये

थिर ठहराई ॥ ४ ॥

---

*लालच ।

॥ शब्द १५ ॥

बैठि उजियारी देखि ले भाई ॥ टेक ॥

सतगुरु साहब गहे रहहु तुम, त्यागि देहु दुचिताई ।
कर करु ध्यान दिया दाया करु, तेल तत्त भरि लाई ॥१॥
बाती ब्रह्म ताहि में भेंवहु, पारस लाइ अंधियारी जाई ।
जगजीवन अस निरमल निरखहु, काहे काँ
जीव डेराई ॥ २ ॥

॥ शब्द १६ ॥

रहु सत साँईं राखु निहार ॥ टेक ॥
दिल खाक करु सब खाक है,
चहु पवन दसहूं द्वार ।
तहँ सोधि रहु छबि निरखि नैनन,
ससि भानु छबि तेहिं वार ॥ १ ॥
बैठि तहँ भ्रम त्याग करिकै,
मूरति अलख अधार ।
जगजीवन यहि जुक्ति रहे तेहिं,
नाहिं बाँकहि बार* ॥ २ ॥

॥ शब्द १७ ॥

बौरे जामा पहिरि न जाना ।
को तैं आसि कहाँ ते आइसि,
समुझि न देखसि ज्ञाना ॥ १ ॥

*बाल टेढ़ा न हो ।

घर वहु कौन जहाँ रह बासा,
तहाँ ते किहेउ पयाना ।
इहाँ तौ रहिहौ दुई चार दिन
अंत कहाँ कहँ जाना ॥ २ ॥
पाप पुन्न की यह बजार है,
सौदा करु मन माना ।
होइहि कूच ऊँच नहिं जानसि,
भूलसि नाहिं हैवाना ॥ ३ ॥
जो जो आवा रहेउ न कोई,
सब का भयो चलाना ।
कोऊ फूटि टूटि गारत भा,
कोउ पहुंचा अस्थाना ॥ ४ ॥
अब कि सँवारि संभारि बिचारि ले,
चूका सो पछिताना ।
जगजीवन दृढ़ डोरि लाइ रहु,
गहि मन चरन अड़ाना ॥ ५ ॥

॥ शब्द १८ ॥

मन महँ अन्तर सुमिरहु नाम ।
कर्म अनेक कटहिं छिनमहियाँ, सुफलहोहिं दृढ़ काम ॥ १ ।
तजु परपंच दुष्टई झूँठी, झूँठे हैं गृह ग्राम ।
झूँठे हैं सब नाम बिहूना, झूँठे हैं धन धाम ॥ २ ॥

मात पिता भगनी भाई सुत, हित कुटुम्ब सुख बाम।
एहि आसा झूठे परि भूले, कोउ नहिं आयो काम॥३॥
गहि रहु जुक्ति जग्त ते न्यारे, सत संजोग बिस्राम।
जगजीवन निर्मल निर्भय ह्वै, दाग छूटि गा स्याम॥४॥

॥ शब्द १९॥

मन महँ नाहिं बूझत कोय।
नहीं बसि कछु अहै आपन, करै करता होय॥१॥
कहत मैं तैं सूझि नाहीं, भर्म भूला सोय।
पड़े धारा मोह की बसि, डारि सर्बस खोय॥२॥
करै निंदा साध की, परि पाप बूड़े सोय।
अंत फजिहत होहिंगे, पछिताय रहिहैं रोय॥३॥
कहौं समुझि बिचारि कै, गहि नाम दृढ़ धरु टोय।
जगजीवन ह्वै रहहु निर्भय, चरन चित्त समोय॥४॥

॥ शब्द २०॥

मन तैं नाहिं इत उत धाव।
रटत रहु दुइ अच्छर अंतर, अपथ गैल न जाव॥१॥
उहाँ ते निर्बिन्दु आयो, पिंड बासा गावँ।
चेति सुद्धि सँभार ले तैं, चूकु नाहीं दाव॥२॥
समुझि फिरि पछिताइ है, परि जोनि बहु डरुपाव।
सत्त सरसौं बाँटि उपटन, अंग अपने लाव॥३॥
छूटि मैलं होय निर्मल, नूर नीर अन्हाव।
जगजीवन निर्बान होवै, मिटै सब दुचिताव॥४॥

॥ शब्द २१ ॥

आपु ते डारत आपु नसाई ।
कहूँ बिबाद कीन्ह भक्तन ते,पाछे मन पछिताई ॥१॥
काहू क दोष देइ नहिं कोई, धाइ जरै जो जाई ।
साधु बिबेकी दाया राखत,रामहिं दरद न आई ॥२॥
गर्ब-प्रहारी गुमान न राखैं, करै जानि जो जाई ।
रावन औ हरनाकुस मारा,कछू बिलम्ब न लाई ॥३॥
नर केतान कवनि गिनती महँ,कीट कि नहिं समताई ।
जो भक्तन ते बैर कियो है, अंत रसातल जाई ॥ ४ ॥
नहिं मानै तौ बूझति ले मन,कहत अहौं गोहराई ।
जगजीवन जे दीन लीन मन,तिन पर सदा सहाई ॥५॥

॥ शब्द २२ ॥

दुनियाँ परि परिपंच न जानी ।
नहिं नय चलहिं गुमान लादे,बोलहिं विष रस बानी ॥१॥
सिद्ध साध कै निंदा करि,नहिं डेरु राम क मानी ।
अंत भला नहिं आगे होइहि,दिन दिन होइहि हानी ॥२॥
परिहैं अंतहिं घोर नरक महँ,कहैं सत ज्ञान बखानी ।
तहाँ परे भुक्कहिं फिरि बहुतै,समौ बीति पछितानी ॥३॥
अहै उबार दीनता ह्वै चलि,गहि सत नाम निसानी ।
जगजीवन गुरु चरनन लागे, निरखत छबि
निरबानी ॥४॥

॥ शब्द २३ ॥

देखहु रे बौरे नैन उघारि ।
काह कौल करि आयहु जग महँ,
अब कस डारेहु मनहिं बिसारि ॥ १ ॥
थिर हू कोउ रहै ना पाइहि,
इहाँ बसेरा है दिन चारि ।
अइहैं दूत बाँधि लै जैहैं,
कोऊ नाहीं लगहि गोहारि ॥२॥
दौलत धाम छूटि सब जाइहि,
छुटिहैं मातु पिता सुत नारि ।
जगजीवन गुरु-चरन गहे रहु,
गाढ़ परिहि तौ लेहैं उबारि ॥३॥

॥ शब्द २४ ॥

यहि जियने का करु न गुमान ॥टेक॥
उतहि जन्म पाय नर देही,
भजन बिना को नाहिं पछितान ।
दौलत धाम देखि कै भूल्यो,
बिसरि गयो वह पाछिल ज्ञान ॥१॥
ना थिर रहे नहीं थिर रहिहै,
जाइहि अंत करि सबै पयान ।
सेन समेत रावन गे छिन महँ,
तिनहूं के कछु रह्यो न निसान ॥२॥

अन्त काल सब कछु चलि जाइहिं, ।
चलि जैहै ससि-गन अरु भान ।
जगजीवन सब कछु चलि जाइहि,
रहिहै इक सत नाम निदान ॥३॥

॥ शब्द २५ ॥

मनुवाँ समुझि करहु तेवान* ।
जब तुम आयहु साईं पठवा, अब कस भयो हैवान ।१।
तब कोउ संग साथ नहिं कोऊ, जग आयहु निरबान।
अब हित लागि चाखि बिषया फल, फिरत
अहहु बौरान ॥२॥
भरमत फिरत नहीं थिर बैठत, बिसरि गयो अस्थान।
नाहीं सुद्धि पाछिली आवत, ता तें भयो गुमान॥३॥
हो सचेत अब जागि उलटि कै, निर्गुन करु पहिचान।
जगजीवन जुग जुग हहु संगी, सतगुरु चरन प्रमान।४।

॥ शब्द २६ ॥

सत्त नाम बिना मन कैसे पार तरिहौ ॥टेक॥
महा कठिन भर्म जार सूझै नहिं वार पार,
कहौ काह करिहौ ।
जुक्ति करहु चरन सरन लागि पागि,
नहिं तौ फाँसि परिहौ ॥१॥

*फ़िकूर ।

जे जे जग आये कोऊ नाहिं बाचे,
धीरज कौन धरिहै।
जोगी जती सिद्ध साध,
कोऊ नाहिं रहिहै ॥ २ ॥
मिलि गये अमर भये ते जग्त आस,
चित्त ते सब दहिहै।
जगजीवन दास गुरू पास,
जुगन जुग संग रहिहै ॥ ३ ॥

॥ शब्द २७ ॥

अरे मन समुझि बूझहु ज्ञान।
भजहु अंतर मगन ह्वै कै, होउ नहिं हैवान ॥१॥
नाहिं वार औ पार है, करि जात नाहिं बयान।
रच्यो रचना जानि कै, अस अहैं कृपानिधान ॥२॥
यहि भाँति ते सुख पाइहौ, नाहिं होइ है नुकसान।
देखु नैन पसारि कै, कोउ नहि अहै अजान ॥३॥
रहु दीन लीनं चरन ते, तजि देहु गर्व गुमान।
दिन चारि का जग है बसेरा, अन्त खाक समान ॥४॥
मरहु जीवत जियहु कछु दिन, मौत अहै निदान।
जगजीवन ते अमर भे, गुरु चरन मन लिपटान ॥५॥

॥ शब्द २८ ॥

सुनु सखि तुम ते कहौं समुझाई ॥ टेक ॥
करु न गुमान बहुरि पछितैहै,
काहे क परसि भुलाई ।
तब तैं आइसि कौन कौल करि,
अब कस सुधि बिसराई ॥ १ ॥
जागि लागि लय नात नाह ते,
देहु त्यागि दुचिताई ।
एहु घर दिन दुइ चार का नैहर,
परिहौ पर घर जाई ॥ २ ॥
हँसि कहि बात घात तुम जानिहहु,
रहि मन महँ पछिताई ।
जगजीवन सत पिउ अंतर मिलु,
काहे क जीव डेराई ॥ ३ ॥

॥ शब्द २९ ॥

अरे मन रहहु चरन ते लागि ।
इत उत सकल देहु तुम त्यागि ॥१॥
दुइ कर जोरि कै लीजै माँगि ।
सोवत उठेव मोह ते जागि ॥२॥
नैन निरखि छबि रहि रस पागि ।
कर्म भर्म सब जैहैं भागि ॥३॥

जगजीवन अस रहि अनुराग ।
जानु आपने तब हीं भाग ॥४॥

॥ शब्द ३० ॥

अरे मन जपहु मंत्र बिचारि ।
नाहिं कोइ थिर अहै यहि जग, जिवन है दिन चारि ॥१॥
आवत है जग जात आहै, देखु नैन पसारि ।
जीव जंतु पसु पंछी तत्त, तैसई नर नारि ॥२॥
उठत बैठत, रमत ठाढ़े, सोवत जगत सँभारि ।
डोरि ऐसी रहहु लाये* जीति लेहु सँवारि ॥३॥
त्यागि मैं तैं हठ बिबादं, रहौ नय चलि हारि ।
जगजीवन यहि जुक्ति तेनी, चलहु आपुहि तारि ॥४॥

॥ शब्द ३१ ॥

जो पै नाम रहै जप लाय ।
तेहि के भागत कुल्ल बलाय ॥१॥
तेहि का बौरा कहै सब लोय ।
वहि का अंत न पावै कोय ॥२॥
बिन बोले जौ रहा न जाय ।
तौ मन नाहिं अंतर ठहराय ॥३॥
रस रसना बिरले जन पाय ।
अपने अंतर रहै छिपाय ॥४॥

*से ।

पंडित काहे क पढ़ै पुरान ।
दुइ अच्छर आहै परमान ॥५॥
राति दिवस लहि करै पुकार ।
सत मत मंत्र न करै बिचार ॥६॥
जेहि मत अंतर मिल्यो है आई ।
कथा पुरान पढ़ब बिसराई ॥७॥
रटनि रसनि जेहि नाम की आई ।
तेहि का कछु जग नाहिं सधाई ॥८॥
नहीं तपस्या तिरथ अन्हाई ।
तेहि के दरस पाप कटि जाई ॥९॥
राम संत ते अंतर नाहीं ।
संत ते कबहूं न्यारे नाहीं ॥१०॥
जगजीवन कहै प्रगट पुकारी ।
अपने मन महँ लेहु बिचारी ॥११॥

॥ शब्द ३२ ॥

साधो जब ते यह तन थाको ॥टेक॥
सुत जन्मत सुख आस राखिकै, फिर नहिं कोउ काहू को ।
ऐंठि चलहि डरपहि नहिं मन ते, बचन सो मुंह से भाखो १
छूटी कानि लोक की मन ते, नारि नीच तन ताको ।
हँसै हँसावै जानि आपको, नहिं बिबेक को आँको २

नीच प्रसंग रंग ते रातहि, भ्रमत फिरत है डाको* ।
जो देख्यो सो कहत हौं परगट, नहीं गुप्त मैं राखो ३

॥ शब्द ३३ ॥

हम समान नहिं कोऊ भाई ।
ऐसी जग की रीति देखिये, कहौं तो कहा न जाई ॥ १
ऐसी मति संसार की आहै, बातन की अधिकाई ।
सपनेहु रामहिं जानहिं नाहीं, झगरा नितहि बढ़ाई ॥ २
नित उठि करहिं दुष्टई सब कै, जिय महँ नाहिं डेराई ।
करि बहु पाप कमाई नितहीं, सो पड़े नरक महँ जाई ॥ ३
कहैं कि हम समान को आहै, थोरे धन इतराई ।
गुन त्यागिन औगुन हित लागे, डारिन सबै नसाई ॥ ४
दौलत दाम धाम सुख भूले, वह सुधि गै बिसराई ।
पर्यौ काम जब अंत न पायो, सब तजि चल पछिताई ॥ ५
समुझि बूझि हक† राह चलहु रे, कहत अहौं गोहराई ।
जगजीवन सब झूठे आहैं, नाम भजहु चित लाई ॥ ६

॥ शब्द ३४ ॥

अरे मन लटकि अटकि रहु लागी ।
तजु परपंच कुशब्द कुसंगति, ह्वै सचेत उठि जागी ॥ १
दुनिया अंध धंध परि भूली, कठिन मोह कै आगी ।
तेहि परि जरि गै खाक उड़ाइहि, जुक्ति ते रँग रहु त्यागी ॥ २

---

*कूदता हुआ । †सत्य ।

नर नारी पसु पंछी जे जग, सब छेदा है साँगी ।
बचा न कोई बचाये सोई, नाम सरन रहु भागी॥३
दुइ कर जोरि यहै है अवसर, दरस लेहु बर माँगी ।
जगजीवन दै सीस चरन तर, मस्त रहहु रस पागी॥४

॥ शब्द ३५ ॥

दुनियाँ धंध लागि अरुझानी ।
हित मित चित्त लोभाइ रहत है, पाछिल सुद्धि हेरानी॥१
आयो जहँ से घर सो भूला, यहु घर रूधिर क पानी।
ताहो उद्र साज कियो करता, ताही म आनि समानी॥२
डोरी पोढ़ि लगाइ निरगुन ते, अगिन म भे अस्थानी।
तेहि बल गलै जरै तन नाहीं, रहि दस मास सुखानी॥३॥
बाहर भयो गइ सुबुद्धि वह, भे अहंकार गुमानी ।
तीनिउ पन गे नाम बिहूने, अंत बूड़ि बिनु पानी॥४॥
कैसेहु नहीं मुग्ध नर चेतत, कहै सब्द यह बानी।
जगजीवन बचिहै पै सोई, चित्त चरन ठहरानी॥५॥

॥ शब्द ३६ ॥

बौरे समुझि देखु मन माहीं ।
माया देखि कै भूल फूल नहिं, तोर नहीं कछु आहीं॥१
दिना चारि का अहै पेखना, कोउ काहू का नाहीं।
सुधि बिसराय चेत नहिं कीन्ह्यो, अंत काल पछिताहीं॥२

देह धरे नर नाम न जान्यो, वृथा जियहि जग माहीं ।
जगजीवन भजु राम निर्भय ह्वै, रहिये चरनन माहीं ।३।

॥ शब्द ३७ ॥

साधो देखहु अपने मनहिं बिचारी ॥ टेक ॥
दिना चारि का यह है खाका,
सो तकि नहिं भूलहु संसारी ।
परि कै सुखद भरम नहिं भटकहु,
ह्वै सचेत रहु डोरि सँभारी ॥ १ ॥
नाम बिहून नीच सब हीं ते,
नीच ते नीच बहुत अधिकारी ।
जैसे खांड़ मीठ सब हीं कहैं,
अनहित लागत खारी ॥ २ ॥
करि बिबेक सों ज्ञान आपने,
जुक्ति बास करि सब ते न्यारी ।
जगजीवन अमृत रस दरसन,
पीवत रहहु सो नैन निहारी ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

रटहु रसना नाम अच्छर फूलु भूलु न भाई ।
एक दिन दुख होइ है फिर रहैगा पछिताई ॥१॥
कस न जीवत सुमिर मन महँ त्यागि दे गफिलाई ।
तजहु जग परपंच निन्दा करहु ना कुटिलाई ॥ २॥

यहि पाप ते जम दूत कसि हैं रहैागे खिसियाई ।
रहे नहिं कछु हाथ एकौ बाँधि लैकर जाई ॥३॥
लोग सबै कुटुंब सुत हित नारि भगनी भाई ।
पिता प्रीति लगाय रोइहै रहैगा अरुगाई* ॥ ४ ॥
भाई बर्ग सँग उहैा त्यागहि देहै सब बिसराई ।
दौलत धन धाम काम काज नहिं आई ॥ ५ ॥
छत्र पति औ नर पती सब झूठि है प्रभुताई ।
जगजिवन दास नाम साँचा ताहि रहु लौ लाई॥६॥

॥ शब्द ३९ ॥

जनम पाइ जग जान्यो नाहीं ।
भाग बड़े ते पाइ देहँ नर,
सुधि गै भूलि पस्यो भव माहीं ॥ १ ॥
देखत खात पियत गाफिल मन,
सुख आनंद बहुत हरषाहीं ।
डोलत बोलत चलत अपथ पथ,
भरे मद अंध चेत कछु नाहीं ॥ २ ॥
मैं तैं मारि सँभारि न आवे,
अघ क्रम हित करि बहुत कमाहीं ।
तेहि पर गई सुद्धि बुधि सब कर,
पग थाके जब फिरि पछिताहीं ॥ ३ ॥

*अलगाय ।

साधो साधि सुरति दृढ़ करिये,
रहि रसि बसि छबि अंतर माहीं।
जगजिवन दास जगत ते न्यारे,
गुरु के चरन बिसरि नहिं जाहीं ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४० ॥

अरे मन बौरे समुझि बिचारु।
को तैं अहसि कहाँ ते आयसि, अब हूं डोरि संभारु ॥१
बहसि न इत उत हूँ थिर रहि कै, सुकिरत नाम पुकारु।
नहिं कोइ अचलसबैचलिजाइहि, कछु नहिं अहैकरारु॥२
काया कनक देह नर पायो, करि ले कछुक सँवारु।
समौ यही फिरि और न पैहो, भजि कै अपुहि तारु॥३
लाये प्रीति रीति ऐसी रहु, सूरति छबि न बिसारु।
जगजीवन सतगुरु के चरनन, जानि सर्बसौ वारु ॥४॥

॥ शब्द ४१ ॥

बौरे काहे का करत गुमान।
तोरे नाहिं कछु समुझि देखु मन,
चेतहु होउ न हैवान ॥ १ ॥
दौलत धाम काम नहिं आइहि,
जब तजि है तन प्रान।
सुत पितु नारि बंधु औ माता,
तजि हैं एउ निदान ॥ २॥

कस नहिं सब तजि भजु वहि नामहिं,
ये है सत्त प्रमान ।
जगजिवन दास जग से ह्वै न्यारा,
अंतर धरि रहु ध्यान ॥ ३ ॥

॥ शब्द ४२ ॥

साधो मन मन रहहु बिचार ।
निरखत रहहु परखि छवि देखत,
दृढ़ करि सुरति सँवार ॥१॥
सीतल ह्वै रहु धरु सँभारि पग,
तमा[*] तुजुक[†] तैं मार ।
पाँच बचाइ चलाइ लाइ रहु,
आपन चहसि सँभार ॥२॥
मैं तैं ई तौ अहं मद गलती[‡],
एइ सब करत बिगार ।
तेहिं गरुवाई बोझ ते दाबे,
नाहीं होत सवार ॥३॥
कुमति प्रसंग पचीस एक सब,
जानि सर्बसै वार ।
जगजीवन सब लै न्यारे रहु,
चरन औ रूप निहार ॥४॥

[*]लालच । [†]शान । [‡]फंद , जाल ।

॥ शब्द ४३ ॥

ए मन त्यागि देहु गुमान ।

कहाँ ते करि कौल आयहु, नाहिं समुझत ज्ञान ॥१॥
छिया बिंदु का पहिरि जामा, हितं भयो हैवान ।
सुद्धि सोइ बिसारि दीन्हेव, कर्म आइ समान ॥२॥
भूलु नहिं तकि देखु सुख परि, अचल नहिं अस्थान ।
जाइगा चल रहहि ना कोइ, बाल बूढ़ जवान ॥३॥
सिद्ध साधं जती जोगी, करहिं एऊ पयान ।
अमर ते मरि जाइंगे चलि जाहिंगे ससि भान ॥४॥
जाइगा चल रहहि ना कछु गहहु पद निर्बान ।
जगजीवन मति निर्मलं धरु, रहहु अंतरध्यान ॥५॥

॥ शब्द ४४ ॥

मनुवाँ सत्त नाम ले गाई ।
दुनिया चली जात पल छिन छिन,
कोऊ न थिर ठहराई ॥१॥
नहिं करार दिन घरी बरस का,
केहु का जानि न जाई ।
मैं तैं करि अभिमान गुमानहिं,
सुख परि गे बौराई ॥२॥

कोउ काहु क नहिं मातु पिता हितु,
नारि बन्धु कुटुंबाई ।
ये सब अपने काम स्वार्थ के,
अंत रहैं अरुगाई ॥३॥
ऐसे सूल काँट ते छेदे,
नहिं कोइ लेत बचाई ।
जगजीवन सब बृथा जानिकै,
रहे चरन सिर नाई ॥४॥

॥ शब्द ४५ ॥

कलि जागत जे राम की कानि ।
नहिं डरपत आहै मन माहीं भरम पड़े हैरानि ॥१॥
देत हैं दुख जानि दुखियहिं दरद नहिं मन आनि ।
होयगी दरबार फजिहत मारि बूझहिं छानि ॥२॥
मारि मुगरिन मूड़ फोरहिं मानिहै न हैवान ।
जन्म कर्म नसाइ जैहै होइ है सब हानि ॥३॥
डारि देहैं नरक महँ जहँ अग्नि है अधिकानि ।
त्रास दुख अधिकार है कोउ नहिं उबारहि आनि ॥
पछिताइ है मन समुझि करि है बड़ो दुख की खानि ।
देखि ज्ञान ते परत है तस कहत अहों बखानि ॥५॥
दीन लीनं नाम गहि रहु भर्म तैं नहिं मानि ।
जगजीवन बिस्वास बसि गुरु चरन रहु लिपटानि ॥६॥

॥ शब्द ४६ ॥

साधो कठिन रीति कल माहीं ।
परपंचहिं माँ निसु दिन बीतत,
नामहिं सुमिरै नाहीं ॥ १ ॥
तब को हता गात नहिं काहू,
रह्यो उद्र जब माहीं ।
सूरति लाइ सत्त माँ राखिन,
जरे अगिन महँ नाहीं ॥ २ ॥
सो बिस्वास छाँड़ि सब दीन्हो,
पापै कर्म कमाहीं ।
सपनेहु समुझि बूझि नहिं आवै,
परि भव मोह बिलाहीं ॥ ३ ॥
जन्म देह उत्तम नर पायो,
सुधि बिहून कहँ जाहीं ।
गयो अकारथ नाम न जाना,
नहिं काहू महँ आहीं ॥ ४ ॥
साध का सब्द मानि जो लेहैं,
दाग न लागहि ताहीं ।
जगजीवन अंते अंतर नहिं,
भवसागर तरि जाहीं ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४७ ॥

साधो कहत अहौं गोहराई ।
दोष देइ अपने करमन का,
डारत अहै नसाई ॥ १ ॥
बेपरतीत भयो मनहीं महँ,
दुबिधा रह्यो समाई ।
बिसरि गयो जिन पाले उद्र महँ,
अगिन ते लियो बचाई ॥ २ ॥
अब तब सों आपुहि सब व्याकुल,
बूझि न मन महँ आई ।
बंधे अहहिं अंध ह्वै डोलहिं,
निकटहिं दूरि बताई ॥३॥
सत मत गहै रहै कौनिहु बिधि,
बकु मीनहिं टक लाई ।
जगजीवन यह जुक्ति भक्त भे,
जोति में रह्यो समाई ॥४॥

॥ शब्द ४८ ॥

साधो सुनु कल का ब्योहारा ।
अपने अपने आगी पानी,
जरत है सब संसारा ॥१॥

नाहीं सुधि अपने तन की है,
और क करहिं बिचारा।
ज्ञानिन काहँ कहैं अज्ञानी,
आपु बुद्धि अधिकारा ॥२॥
हैं बल छीन ते बली कहावैं,
हम तें नहिं अधिका रा।
अहैं अदत्त कहावैं दाता,
बूड़ि मुए मँझ धारा ॥३॥
कुमति प्रसंग सुमति नहिं आवै,
गहैं न नाम अधारा।
जगजीवन अंतर महँ सुमिरैं,
उतरैं भवजल पारा ॥४॥

॥ शब्द ४९ ॥

कोउ काहुइ दोष न देई।
जो करतब्य अहै आपुनि माँ, सो तैसहि फल लेई ॥१॥
जो दुख देय दुक्ख सो पावे, सुख दे सुख तेहि होई।
हाजिर राम अहैं सबहिन महँ, गर्ब न भूलै कोई ॥२॥
रावन ऐसे छत्री ह्वै गे, तेहि सम भयो न कोई।
इन जब बैर कीन्ह भक्तन तें, डार्यो छिन महँ खोई।३।

लंका कनक सो खेह* उड़ानी, जैसे मैल गधाई† ।
पुत्र लाख सवा लख नाती, तिन के रहा न कोई ॥४॥
नर केतानि कवनि गिनती महँ, कहत सब्द सत सोई ।
जगजीवन अंतर महँ सुमिरहु, सूरति बिलग न होई ॥५॥

॥ शब्द ५० ॥

मन तन खाक करि कै जान ।
नीच तें ह्वै नीच तेहि तें, नीच आपुहि मान ॥१॥
त्यागु मैं तैं दीन ह्वै रहु, तजहु गर्ब गुमान ।
देतु हौं उपदेस याहै, निरखु सो निरबान ॥२॥
कर्म धागा लाय बाँधा, हिंदु मूसलमान ।
खैंचि लीन्ह्यो तोरि धागा, बिरल कोइ बिलगान ॥३॥
खाक है सब खाक होइहि, समुझि आपन ज्ञान ।
सब्द सत कहि प्रगट भाषैं, रहहि नाम निदान ॥४॥
काल को डर नाहिं तिन्ह काँ, चौथ‡ रहि चौगान ।
जगजीवन दास सतगुरु के, चरन रहि लिपटान ॥५॥

॥ शब्द ५१ ॥

भाई रे कहा न मानै कोई ।
जिहिं समुझाय कै राह बतावौं,
मन परतीत न होई ॥ १ ॥

*ख़ाक । †सोने की लंका की ख़ाक इस तरह उड़ी जैसे मिट्टी या कूड़ा करकट गधे पर ढो कर ले जाने से उड़ता है । ‡चौथे लोक में ।

कपट रीति कै करहिं बंदगी,
सुमति न व्यापै सोई ।
भये नर हीन कुमारग परि कै,
डारिन सर्बस खोई ॥ २ ॥
गे भरुहाय* तनिक सुख पाये,
मैं तैं रहे समोई ।
फिरि पछिताने कष्ट भये पर,
रहे मनहिं मन रोई ॥ ३ ॥
देखि परत नैनन से वैसे,
कठिन जीव है वोई ।
जगजीवन अंतर महँ सुमिरै,
जस होई तस होई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५२ ॥

आपु क चीन्हहु रे भाई,
बिन चीन्हे नहिं सुख पाई ।
जिन जिन काहू आपु क चीन्हा,
उठि तहँ कहँ पहुंचे जाई ॥१॥
वह घर बिसरा जहँ ते आयहु,
परपंचहिं हिताई ।†
जामा मैल पहिरि मद माते,
मैं तैं पर बौराई ॥२॥

*उबल पड़े । † अच्छा लगता है ।

कछू बिचार मनहिं नहिं आयो,
जहँ तहँ अरुझे जाई ।
झक्का झोरी ऍंचा तानी,
जहँ तहँ गये बिलाई ॥३॥
ऐसी कुगति अहै दुनिया की,
नाम सरन बिन रहे पछिताई ।
सतगुरु मते मंत्र जेहि दीन्ह्यो,
अम्मर भे चरनन सिर नाई ॥४॥
जगजीवन जुग जुग[†] जुग[‡] बंधा,
निरखत है निरमल निरथाई[§] ॥५॥

॥ शब्द ५३ ॥

साधो करै बिबाद नहिं कोई ।
अपने मते मंत्र महँ लागहु, भजत रहहु मन सोई ॥१॥
कस्यप कंस रावना कौरौ, तिन के रहा न कोई ।
और कै कौन केतनि बपुरा है, कन प्रमान है सोई॥२॥
ज्ञानी पंडित जोगी भोगी, सिद्ध साध जो होई ।
सब निर्बाह नाम तें आहै, गर्ब किहे गा खोई॥३॥
अंतर भजै मारि कै मैं तैं, चरनन चित्त समोई ।
जगजीवन भजु और आस तजि, जस
होई तस होई ॥४॥

[†]जुगान जुग । [‡] जोड़ा [§]अथाह ।

॥ शब्द ५४ ॥

बौरे नाम रटु मन लाय ।

खैंचि घट में आनिये कहुं नाहिं देत बहाय ॥१॥

कुसँग संगति कुटिल बौरे संग बैठु न धाय ।

ताहि पारस बेधि है तब होइ है गफिलाय ॥ २ ॥

तजहु गर्ब गुमान मैं तैं हिये रहु दिनताय* ।

त्यागि दे बकवाद बकना गहे रहु सितलाय† ॥३॥

देत हैं। उपदेस परगट कह्यो संतन गाय ।

जगजीवन बिस्वास करि कै रहु चरन लिपटाय॥४॥

॥ शब्द ५५ ॥

यहि जग महँ बंदे गरीब ह्वै रहना ।

साँईं तें चित लाउ रे बंदे ।

तजि दे गर्ब गुमाना ॥ १ ॥

कनक कोट लंकापति रावन,

सोऊ खाक समाना ।

पाँच पचीस एक नहिं आवत,

ता तें फिरत भुलाना ॥ २ ॥

सुमति मती जे छिमा साधु हैं,

तिन हरि काँ पहिचाना ।

जगजीवन जीवत ते प्रानी,

जिन हरि चरनन ध्याना ॥ ३ ॥

*दीनता । †शीतलता ।

॥ शब्द ५६ ॥

संतो गहहु सुरति सँभारि ।

वहि समय जो किहिन है उन, सो सुधि
दिह्यो बिसारि ॥१॥

इहाँ तौ कोउ नाहिं थिर है, रहैगा दिन चारि ।

खाइ लेहै काल सब कहं जैसे मूस मजारि* ॥२॥

भाइ भगनी मातु पितु, परिवार हितु सुत नारि ।

अंत कोउ ना काम अइहै, कोउ न लेहि उबारि ॥३॥

जानि बृथा मन नाम सुमिरौ, कहत सब्द पुकारि ।

जगजीवन गुरु चरन गहि रहु, सोई लेहि उबारि ॥४॥

॥ शब्द ५७ ॥

साधो सत्त नाम जपु प्यारा ॥ टेक ॥

सत्तनाम अंतर धुनि लागी, बास किहे संसारा ।

ऐसे गुप्त चुप्प ह्वै सुमिरहु, बिरले लखै निहारा ॥१॥

तजहु बिबाद कुसंगति सबके, कठिन अहै यह धारा ।

सत्तनाम कै बेड़ा बाँधहु, उतरन काँ भव पारा ॥२॥

जन्म पदारथ पाइ जक्त महँ, आपुन मरहु सँभारा ।

जगजीवन यह सत्त नाम है, पापी केतिक तारा ॥३॥

॥ शब्द ५८ ॥

मन तुम भजहु नामहि नाम ।

तारि लीन्ह्यो बहुत पतितन उत्तम अस नाम ॥१॥

*बिल्ली ।

गह्यो जिन परतीत करिकै भये तिन के काम ।
मिटे दुख संताप तिन के भयो सुख आराम ॥२॥
देखि सुख परि भूल नाहीं दैालत औ धन धाम ।
अहै यह सब झूंठ आसा नाहिं अ वहि काम ॥३॥
चढ़हु ऊंचे नीच हूै कै गगन है भल ग्राम ।
जगजिवन दास निहारि मूरति चरन करु बिस्राम॥४॥

॥ शब्द ५९ ॥

अरे मन करहु नाम तें प्रीति ।
सीतलं सूसील मारग चलहु ऐसी रीति ॥१॥
त्यागि दे बकवाद निंदा आचलनि* आनीति† ।
पाइ काया कनक की यह नाम बिनु ज्यों भीति॥२॥
आइ यह मृतु लोक में पछितानि करि आनीति† ।
मारि कालं खाइ लीन्ह्यो समुझि समय बितीति ।३।
जुक्ति यहि जग बास करु रहु जक्त बेपरतीति ।
जगजीवन बिस्वास करि गुरु चरन रहु सत सीति ॥४॥

॥ शब्द ६० ॥

बैठि रहहु मन चरनन पास ।
काहे क भरमत फिरहु उदास ॥ १ ॥
राखहु दुइ कर सीस लगाइ ।
सोवत जागत बिसरि न जाइ ॥ २ ॥
निरखहु निर्मल जोति निहारि ।
नहिं उनकी सम कोउ अनुहारि‡॥ ३ ॥

---

*कुचलन। †अनीत। ‡सूरत।

रबि ससि रूप डारि तैं वारि ।
रहु सत मति गहि डोरि सँभारि ॥ ४ ॥
ब्रह्मा रहे बेद धुनि लाइ ।
संकर अंग में भस्म लगाइ ॥५॥
बिस्नु जाइ मन तहाँ समानि ।
सो अब कहि नहिं जात बखानि ॥ ६ ॥
जग महँ काया है उद्यान* ।
जो आये सो सबै भुलान ॥ ७ ॥
रहनि राम गहि नाम कि आस ।
उदित साध ते भये प्रकास ॥ ८ ॥
जगजीवन करु गगन मँडान ।
निरखहु सतगुरु सो निरबान ॥ ९ ॥

॥ शब्द ६१ ॥

डोरि पोढ़ि लागि रहै अंतर के माहीं ॥
निरखि परखि लै लगाय लखै कोउ नाहीं ।
गगन सहर लै दुकान बैठहु थिर ताहीं ॥१॥
सेस ब्रह्मा बिस्नु संकर जोति निरमल वाहीं ।
भानु बिन बिहान है तहँ ससि गन नाहीं ॥ २ ॥
पवन पानी तें बिहून कनि मनि बरसाहीं ।
जग जीवन प्रकास सतगुरु सीस चरन रहहीं॥३॥

*सैर की जगह ।

॥ शब्द ६२ ॥

साधो कहौं तो कहा न जाई।
अनुचित चरित देखि दुनिया के, मन महँ रहौं चुपाई॥१॥
जहवाँ चर्चा होत नाम के, काहू नाहिं सोहाई।
परपंची कछु औरहि भाषैं, बहुत करहिं कुटिलाई॥२॥
सुख के फल ते खाइ न पाइन, बिष रस बहुत हिताई।
किहिन बिगार है जन्म जन्म का, परे नर्क महँ जाई॥३॥
खाय अघाय फूलि कै बैठे, गर्ब करहिं अधिकाई।
सुमति पराय* परचित ह्वै बैठे, कुमति प्रगट में आई॥४॥
मैं तैं गर्ब गुमान त्यागि कै, नय चालहु दिनताई।
जगजीवन डर नाहिं काल का, लेहै नाम बचाई॥५॥

॥ शब्द ६३ ॥

अरे मन करहु सत्त बिचार।
समुझि बूझि कै जानि आपन, बृथा है संसार॥१॥
नीर बुंद तें साज कीन्ह्यो, एतो है बिस्तार।
नगर उत्तम बनो आहै, सोइ न वारा पार॥२॥
तहाँ के परधान पाँचो, करहिं बहु अपकार।
संग ताहि पचीस नारी†, किहेहु नहिं बयोहार॥३॥
मिलि चलहु बस करहु तीसौ‡, संग लै कै सिधार।
जगजिवन दास गुफा गगन महँ, निरखि
छबिहि नियार॥४॥

*भाग गई। †प्रकृति। ‡पाँच तत्व और पचीस प्रकृति।

॥ शब्द ६४ ॥

मन बिनु समुझे नाहीं होय ।

महा अपरबल अहै माया, भूलि रहे सब कोय॥१।

सुख आनँद में पर्‌यो गाफिल, डारि सर्बस खोय ।

अंत काल पछिताय रहे हैं, चले कर मलि रोय ॥२॥

नाहिं काहु क अहै कोऊ, कहै आपन सोय।

पुछिहै कछु कीन्ह करतब, बहुत फजिहत होय ॥३॥

डोरि पोढ़ि लगाय रहि जग, नाहिं पूछै कोय।

जगजिवन दासं चरन गहि मन, अचल अम्मर होय॥४॥

॥ शब्द ६५ ॥

मन रे प्रभु सों चित्त लगाव ।

छाँड़ि दे जंजाल जक्त को,

गुरु मारग माँ आव ॥१॥

गुरु के बचन हृदय धरु मूरख,

ज्ञान ध्यान मन लाव।

अष्ट कमल दल भीतर राजा,

पाँच तत्त को राव ॥२॥

त्रिकुटी मध्य दृष्टि करु नैनन,

ताड़ी तहाँ लगाव ।

मणि समान दीपक करु मनसा,

जोति में जोति मिलाव ॥ ३ ॥

मन औ पवन होत जब इकतर*,
नाहीं बीच बराव।
जगजीवन के प्रभु सिर नायक,
आनँद मंगल गाव ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६६ ॥

सत्त नाम सुमिरहु मन माहीं ॥टेक॥
यह तौ बजार है पाप पुन्न को।
नेकी बदी दुइ सौदा बिकाहीं ॥ १ ॥
केहु नेकी केहु बदी बनिज करि।
सो बिसाहि अपने घर माहीं ॥ २ ॥
जगजिवनदास जे नाम बनिज किये।
अमर भये ते मरहीं नाहीं ॥ ३ ॥

॥ शब्द ६७ ॥

ए मन काहे क पत्यो भुलाइ।
काहे डाखो सुधि बिसराइ ॥ १ ॥
जब तुम आयहु करि इकरार।
तब तुम नाहीं कीन्ह बिचार ॥ २ ॥
छिया बुंद माँ रह्यो समाइ।
तब हूं नाहीं कछू चेताइ ॥ ३ ॥
जामा पहिरि भयो मस्तान।
रह दस मास न किह्यो तेवान† ॥ ४ ॥

*एक रस। †फ़िक्र।

जस्यो नहीं अगिनी महँ अंग।
बाहर होत भयो चित भंग ॥ ५ ॥
गोद लाय फिरि दूध पियाई।
जुबा में जुबती बहुत हिताई ॥ ६ ॥
कामी करम गयो सब भूले।
मुक्के खात रहहु गे भूले ॥ ७ ॥
बृद्ध भयो तब सुद्धि सँभारि।
तब नहिं सुमिरन जात सँवारि ॥ ८ ॥
कफ खाँसी औ सीत सताइ।
सँवरि सँवरि* तब रहि पछिताइ ॥ ९ ॥
उलटि लगाय रह्यो दृढ़ डोरी।
कहों सिखाय रह्यो मन मोरी ॥ १० ॥
जगजीवन सत मत गहि डोरी।
ससि चकोर ज्यों रहि टक जोरी ॥ ११ ॥

॥ शब्द ६८ ॥

साधो भजहु नाम मन लाइ।
बहुरि नहीं अस औसर पाइ ॥ १ ॥
अब के चूका चूका सोइ।
बहुरे नाहिं सँवारहि कोइ ॥ २ ॥

---

*सुमिर।

माया मोह तकि सबै भुलाना ।
अंत काल सोई पछिताना ॥ ३ ॥
राजा रंक छत्र-पति सोई ।
बिनु वह नाम गये ते रोई ॥ ४ ॥
बुरा न मानहु कहहुं पुकारी ।
देखु आपने मनहिं बिचारी ॥ ५ ॥
यहि ते उत्तम अरु कछु नाहीं ।
धन वे दास अहैं जग माहीं ॥ ६ ॥
जगजीवन कहि प्रगट पुकारी ।
जिन सुमिरा तिन लिया कुल तारी॥७॥

॥ शब्द ६९ ॥

जग की कही जात नहिं भाई ।
नैनन देखि परखि करि लीन्ह्यौ, तऊ न रह्यो चुपाई॥१
आहै साँच झूंठ कहि भाषहिं ,झूंठेह साँच गोहराई ।
ताहि पाप संताप परैंगे, भर्म परे ते जाई ॥२॥
निंदा करत हैं जानि बूझि कै, जहाँ तहाँ कुटिलाई।
जानत अहैं बनाउ ताहि का, देइहि ताहि सजाई।३।
मैं तौ सरन हौं ताहि चरन की, सूरति नहिं बिसराई ।
जगजीवन है ताहि भरोसे, कहै सो तैसे जाई ॥४

॥ शब्द ७०॥

प्रात नाम सतगुरु का गावै ।
अंतै मनुवाँ नाहिं बहावै ॥ १ ॥

मनुवाँ यहै भजन नहिं होय ।
जाइहि भजन बरत सब खोय ॥ २ ॥
दृढ़ ह्वै अंतर जपिये जापा ।
जेहि तें जाहिं कर्म कटि पापा ॥ ३ ॥
अजपा जाप जपै जो कोई ।
परगट कहौं भक्त सो होई ॥ ४ ॥
साधू भये सोई जग माहीं ।
जैसे पदुम कमल जल माहीं ॥ ५ ॥
जग तें न्यारे भये निरासा ।
जगजीवन तेहि चरन क दासा ॥ ६ ॥

॥ शब्द ७१ ॥

करहु बंदगी बंदे सोई ।
जेहि तें अंत भला कछु होई ॥ १ ॥
तजहु बिबाद न निंदा करहू ।
दीन होय मन अपने रहहू ॥२॥
मत सो सत मैं देउँ बताई ।
भजहु नाम यहि जुक्ति तें जाई ॥ ३ ॥
त्यागि देहु मन गरब गुमान ।
तौ भल मानहिं कृपानिधान॥४॥

साध कहत औ बेद पुरान ।
सत्त सब्द याहै परमान ॥ ५ ॥
दुइ अच्छर गहहू तत सार ।
याहै सत मत कीन बिचार ॥ ६ ॥
जगजीवन चरनन लिपटान ।
निरखहु छबि निरगुन निरबान ॥ ७ ॥

॥ शब्द १२ ॥

मन मदमाते फिरहिं बेहाल ।
अंत भयो धरि खायो काल ॥ १ ॥
तत्त ज्ञान मन कीन बिचार ।
सुकृत नाम भजु होय उबार ॥ २ ॥
यह उपदेस देत हौं सोई ।
देह धरे कछु दुक्ख न होई ॥ ३ ॥
बेद ग्रंथ ज्ञान लियो छानी ।
चेत सचेत ह्वै लीजै जानी ॥ ४ ॥
जगजीवन कहै परगट ज्ञान ।
उलटि पवन गहि धरि रहु ध्यान ॥ ५ ॥

॥ शब्द १३ ॥

जिन मन गह्यो नामहिं जानि ।
त्यागि दुबिधा रहे दृढ़ि ह्वै, श्रोर नाहिं उर आनि ॥१॥
हर्ष सोकं नाहिं आहै, नाहिं लाभ न हानि ।
नाहिं छूटत रहत जोरे, साध भे निर्बानि ॥ २ ॥

अहैं बिरले जगत माँ यहि, कवन मैं केतानि ।
जगजीवन निर्बान भा मन, पदुम पात ज्यों पानि॥३॥

॥ शब्द ७४ ॥

साधो दुइ अच्छर तत सार ।
सोई रटत रहौ घट भीतर,
और न करहु बिचार ॥ १ ॥
जिभ्या जपु नहिं कर माला नहिं,
सहज रमहु संसार ।
कहहु न प्रगट भेद काहू तें,
होइहि कहे बिगार ॥ २ ॥
सुच औ असुच न मानहु एकौ,
सहज अचार बिचार ।
ऐसो रहनि गहनि करि रहिये,
मिलन न लावहु बार ॥ ३ ॥
कहौं पुकार बिचार लेहु मन,
और न मत अधिकार ।
जगजीवन बिस्वास करै सुनि,
उतरि जाय भव पार ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७५ ॥

मन तुम रहहु चरनन लागि ।
काहू की नहिं करहु आसा, देहु सरबस त्यागि।१।
रह्यो सोवत बहुत दिन लहि, सुखद बहु हित लागि।
गुरू जब उपदेस दीन्हो, चौंकि उठि तब जागि २

जुगन जुग सँग नाहिं छूटै, लेहु यह बर माँगि ।
निरखि सूरति रहहु लागे, भींज रँग रस पागि ।३।
निरगुनं निरबान निरमल, डोरि सत मन लागि ।
जगजीवन यहि जुक्ति तें, तब जानु आपन भागि ।४।

॥ शब्द ८६ ॥

नाम सुमिर मन बावरे,
कहा फिरत भुलाना हो ॥ टेक ॥
मट्टी का बना पूतना*,
पानी सँग साना हो ।
इक दिन हंसा चलि बसै,
घर बार बिराना हो ॥ १ ॥
निसि अँधियारी कोठरी,
दूजे दिया न बाती हो ।
बाँह पकरि जम लै चलै,
कोउ संग न साथी हो ॥ २ ॥
गज रथ घोड़ा पालकी,
अरु सकल समाजा हो ।
इक दिन तजि चल जायँगे,
रानी औ राजा हो ॥ ३ ॥
सेमर पर बैठा सुवना,
लाल फर देख भुलाना हो ।

*पुतला ।

भारत टोंट भुआ उधिराना,
फिरि पाछे पछिताना हो ॥ ४ ॥
गूलर कै तू भुनगा,
तू का आय समाना हो ।
जगजीवन दास बिचारि कहत,
सब को वहँ जाना हो ॥ ५ ॥

गुरु और शब्द महिमा

॥ शब्द १ ॥

अब जग हमहिं सिखवत आनि ।
करत हैं चतुराइ बहु बिध, अहैं पाप की खानि ॥१॥
कहूं सिखि सुनि लिहिनि बातैं, कहत अहैं बखानि ।
आप का कछु चेत नाहीं, भजन की है हानि ॥ २ ॥
करत नहिं अंदेस भूले, अहहिं ते अभिमानि ।
अन्तहूं पछिताइ हैं, फिर डूबिहैं बिन पानि ॥ ३ ॥
भजहु नाम गुनाह मेटहि, सरन आपनि आनि ।
जगजिवनदास बचाउ इहि, गुरु सब्द कहि परमानि ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

जे जन नाम भजि बलवान ।
ताहि केवल कोइ नाहीं, कौन मारै मान ॥ १ ॥

रहत निरखत पलक छिन छिन, नाम बहु निर्बान ।
चाखि पीवै जिवै जुग जुग, काल देखि डेरान ॥२॥
कहत कथा प्रगास करि कै, जुगन जुग का ज्ञान ।
उतरि गा सो पार कामन, जानि मानि प्रमान ॥३॥
ताहि कीरति कवन गावै, कहत वेद पुरान ।
जगजीवन बिस्वास करि, गुरुचरन तें लिपटान ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

यहि बन बनत नाहिं बनाये ।
नाहिं है निर्बान कबहूं,
नाम बिनु बहु गाये ॥१॥
पाँच एइ परपंच डारहिं,
रात दिन भरमाये ।
कवन हटकै कहै के नहिं,
लेन अहहिं नसाये ॥ २ ॥
पास लिहे पचीस कतियां,
खात अहहिं धराये ।
जुक्ति डारी लाइ कै,
लौ रमहु इन्हहिं फँदाये ॥ ३ ॥
चढ़िकै सिखरहिं* जिकिर† लावहु,
सुरति मूरति लाये ।

*चोटी । †सुमिरन ।

जगजीवन निर्बान भे,
ते दरस गुरु के पाये ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

साधो अस समौ बहुरि न होई ॥ टेक ॥
लेहु बिचारि सँभारि डोरि गहि,
यहि तें मंत्र न कोई ।
भजहु जानि परतीत आनि मन,
सुफल सिद्ध सब होई ॥ १ ॥
जिन नहिं जाना सो पछिताये,
रहे मनहिं मन रोई ।
काह भयो नर की काया धरि,
बृथा जन्म गा खोई ॥ २ ॥
जागे भागि पागि रस माते,
पल छिन नाहिं बिछोई ।
जगजीवन भवसागर तरिगे
मूरति रहे समोई ॥ ३ ॥

॥ शब्द ५ ॥

मन जग जन्मि कै भजि लेहु ।
चूकि ना यह पाय औसर,
फिरि दोष ना केहु देहु ॥ १ ॥

धाम दौलत बहुत दुनियाँ,
किहिनि जानि सनेहु ।
गयो निज पछिताय कै,
सब झूठ सुत हितु गेहु ॥ २ ॥
आइ जे जे जगत महँ,
यहि भयो ते ते खेहु ।
नाम बिनु कछु काम का नहिँ,
ज्यौं गल्यो कागद मेंहु* ॥ ३ ॥
करहु मन परतीत अपने,
चित्त चरनन देहु ।
जगजिवन दुख सुख दूर होइहि'
अमर जुग जुग होहु ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

यहि जग नाम भजे तरि गये ।
आप जग महँ देह धरि कै, भक्त ते ते भये ॥१॥
जौन लागी रही पुर्बुज, तौनि अंतर गये ।
ताहि रस ते प्रगट भाखौ' जबहिं मस्त भये ॥२॥
रहि सँभारे डोरि लाये, दूरि दुबिधा किये ।
निरखत रहे निहारि निर्मल, सीस चरनन दिये॥३॥
गावत हैं बेद ग्रंथहु, नाम महिमा किये ।
जगजीवन बिस्वास गहे, ते अमर जुग जुग भये ॥४॥

*बरसात ।

॥ शब्द ७ ॥

ग्रौ करै नाहिं जाना ।
क बैठि रहै का,
अन्तै करत पयाना ॥ १ ॥
धावत आवत थिर न रहतु है,
दृढ़ नहिं करत अड़ाना ।
तीनि तें आस निरास होत नहिं,
तातें फिरत भुलाना ॥ २ ॥
गुरु गुनि मंत्र लेहु बैठि सिखि,
अचल रहहु ठहराना ।
लावहु सीस चरन में देखि कै,
झलकत छबि बिनु भाना* ॥ ३ ॥
पास बास रस पाइ मस्त ह्वै
सतगुरु के मन माना ।
'जगजीवन अम्मर ह्वै जोगी,
परगट कियो बखाना ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

रहु मन नाम तें लौ लाय ।
नाम तें जे नाहिं राते, गये ते पछिताय ॥ १ ॥
नाहिं दौलत धाम भूलै, प्रभुइ दीन्ह बनाय ।
जबहिं साइं खैंचि लेहै, कहाँ कहँ दहु जाय ॥२॥

*सूरज ।

गवे जहु भान मैं तैं, चलहु कै दिनताय ।
च: कद ेन भला आपन, देत अहैं लखाय।३।
अहु परगट नाहिं गुप्तं, बूझि जैसी आय ।
जगजीवन बिस्वास करि, गुरु चरन रहु लिपटाय॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

साधो कठिन है उदयान ॥ टेक ॥

नहीं है कछु अंत यहि का, आइ सबै भुलान ।
पियो यह रस बिसरि गावत, नाहिं करहि नेवान* ।१।
मरत नहिं मैं केहू बिधि तैं, करत है नुकसान ।
नहिं बिचारै परे जारै, बिसरि गा औसान ॥२॥
इहाँ के नहिं उहाँ के भे, बीच बीच बिलान ।
समौ बीते काम का नहिं समुझि कै पछितान ।३।
समुझि डोरी नाम की गहि, गगन कीन्ह पयान ।
जगजिवन गुरु के पास पहुंचे, निरखि तकि निर्बान।४।

॥ शब्द १० ॥

प्रभु जी आपनो मोहिं जानि ।

औगुनं अनेक मेटि कै, चरन सरनहिं आनि ॥१॥
भ्रमत मन यहु नाहिं थिर है, होत भजन कै हानि ।
मोरि बपुरे केरि कह बसि, नाहिं मानत कानि॥२॥
चहत आहौं करौं सुमिरन, अवर अवरै ठानि ।
संत पर जेहिं कियो किरपा, दियो सत मत छानि ।३।

*फ़िक्र ।

पाइ रस से मस्त ह्वै गे, निर्मल भे निर्बानि ।
जगजीवन गुरु मंत्र दीन्ह्यौ, चरन रहे लिपटानि ।४।

॥ शब्द ११ ॥

अजब यहि नगर केर सवाँर ।
अहै काया सहर जा को, नाहिं वारा पार ॥१॥
दरवाज नौ दस बंद आहैं, साजि कियो करतार ।
तहँ लोक तीनिउँ चौथ जगमग, सूक्ष्तं बाजार ।२।
तहँ झरत मन-मनि मस्त ह्वै, लै पाइ नित्र अहार ।
संतोष होइ पै तृप्ति नाहीं, मिलि होय नाहिं निनार।३
ब्रह्म बिस्नु महेस सेसं, एक चित निरधार ।
निर्बान निर्मल जोति चमकै, निर्गुनं निरंकार ॥४॥
तहँ दिप्त वारौं भानु ससि की, बिदित है अबिकार ।
तहँ सुद्धि नाहीं बुद्धि नाहीं, सब्द की टकसार ।५।
अस जानि पाइ छिपाइ कोइ कोइ, बिरल है संसार ।
जगजिवन गुरु के चरन गहि रहु, आगे सुन्नंकार ।६।

॥ शब्द १२ ॥

सुनु सुनु सखि री, चरन कमल तें लागि रहु री ॥टेक॥
नीचे तें चढ़ि ऊँचे पाउ ।
मंदिल गगन मगन ह्वै गाउ ॥ १ ॥

दृढ़ करि डोरि पोढ़ि करि लाव।
इत उत कतहूं नाहीं धाव ॥ २ ॥
सत समरथ पिय जीव मिलाव।
नैन दरस रस आनि पिलाव ॥ ३ ॥
माती रहहु सबै बिसराव।
आदि अंत तें बहु सुख पाव ॥ ५ ॥
सन्मुख है पाछे नहिं आव।
जुग जुग बाँधहु एहै दाँव ॥ ५ ॥
जगजीवन सखि बना बनाव।
अब मैं काहु क नाहिं डेराँव ॥६॥

॥ शब्द १३ ॥

बौरे समुझि देखहु ज्ञान।
महा अपरबल अहै माया, अंत काहु न जान ॥१॥
पवन औ जल किया धरती, किया गन ससि भान।
लगे सब टकसार अपनी, खँभ बिनु असमान ॥२॥
देखु नैन पसारि अचरज, प्रगट नाहिं छिपान।
जहाँ जसि है तहाँ तसि है, तहाँ तसि धर ध्यान ॥३॥
सब्द ज्ञान गरंथ बेदं, करहिं सबै बयान।
जिन किया छिन महँ बुन्द तेनी*, ऐसे कृपानिधान ॥४॥
दुइ अंक अजपा जपहु अंतर, तजहु सबै तेवान।
जगजीवन बिस्वास चरनं, करहिं वै औसान ॥५॥

---

*से।

॥ शब्द १४ ॥

चित्त नित्त रहै लागि पलक नाहिं छूटै ॥टेक॥
तागा ज्यौं उगिलि मकरी पुष्ट नाहिं टूटै ।
ऐसी यह जुक्ति पाइ ध्यान नाहिं मोटै ॥ १ ॥
नैनन तें उलटि निरखि सत समाय लोटै ।
संग गुरु प्रसंग ताहि कबहुं नाहिं फूटै ॥ २ ॥
पाँच औ पचोस पाइ लाइ जुक्ति कूटै ।
जगजिवनदास दरस मोती हंस चोंच टूटै ॥ ३ ॥

॥ शब्द १५ ॥

अरे मन गुरु चरन नहिँ त्यागु ।
हर्ष सोक बिसार, दृढ़ सत नामहीं अनुरागु ॥१॥
सूत सेज न मोह माया, चौंकि चेतनि जागु ।
छाँड़ि दे सब जगत आसा, उलटि तेहि तें लागु॥२॥
गगन जगमग वारि रबि ससि, निरखि रस लै पागु।
सीस दै कर जोरि कै तहँ, भक्ति ही बर माँगु ॥३॥
अमर मरु नहिं आउ नहिं जा, रैनि बासर लागु ।
जगजिवनदासं पास ह्वै रहु, सर्ब जागह भागु ॥४॥

॥ शब्द १६ ॥

सब जग मैं मैं करि के भुलाना ।
आनि परे बसि यहि माया महँ,
सुधि नहिं पाछिल आना ॥ १ ॥

अरुझे धंध अंध मद-माते, बिसरि गयो यह ज्ञाना।
निसु दिन परपंचहिं माँ बीतत, छिन पल
राम न जाना ॥ २ ॥
फूले धाम देखि धन दौलत, संत सब्द नहिं माना।
लीन्ह्यौ खैंचि कै भान जोति ज्यौं, मिटि गा
गर्ब गुमाना ॥ ३ ॥
कस न बिचारि सँभारि गहै मन, जानै सकल बिराना
जगजीवन यहि जुक्ति जगत रहि, तेहिं काँ
नहिं नकसाना ॥ ४ ॥

॥ शब्द १७ ॥

करिये निरबान ध्यान चरनन लपटाई ॥टेक॥
इत उत देखि नैनन सोँ चित्त ना बहाई।
गगन बैठे मगन रहिये मंत्र द्यों सिखाई ॥ १ ॥
तीर्थ तहवाँ बासु मूरति छबि जल अन्हाई।
नेग कर्म भर्म छूटि छिनहिं निर्मल ह्वै जाई ॥ २ ॥
बिना नीर पिंड उदित उजियर तहँ दीपकबि नु छाई।
अनूप रूप सुन्दरं ससि भानु जाहिं छिपाई ॥३॥
अस कर हम न साखि सो गुरु सत ना बिसराई।
जगजिवनदास संत गुप्तं प्रगटहिं गोहराई ॥ ४ ॥

॥ शब्द १८ ॥

अरे मन चरन तें रहु लागि।
जोरि दुइ कर सीस दैकै, भक्ति घर ले माँगि ॥ १॥

और आसा झूंठि आहै, गर्म जैसे आगि।
परहिंगे सो जरहिंगे, पै देहु सर्ब तियागि ॥ २ ॥
समौ फिरि एहु पाइहै नहिं, सोउ नहिं गहि जागि।
चेतु पाछिल सुद्धि करिकै, दरसरस रहु पागि ॥ ३ ॥
कठिन माया है अपरबल, संग सब के लागि।
सूल तें कोइ बचे बिरले, गगन बैठे भागि ॥ ४ ॥
भर्म नहिं तहँ भयो निर्भय, सत्त रत बैरागि।
जगजीवन निर्बान भे, गुरु दया जागे भागि ॥५॥

॥ शब्द १९ ॥

जब सुन सब्द मानै कोय ॥ टेक ॥
लाभ दिन दिन सुखित होवै, हानि कबहुँ न होय।
देखि करि तेहिं मुक्ति नाहीं, नर्क परिहै सोय ॥१॥
सब्द भाखै करै साँचा, सत्त सत्त समोय।
पहुंच गे वे गगन घर माँ, काल खाय न कोय ॥३
तहँ बैठि है निर्बान सतगुर, चरन गहि रहि सोय
जगजिवन ते अमर जुग जुग, आवा गवन न होय।४

॥ शब्द २० ॥

मन मैं मारि आगम जान।
तोरु तैं यह बज्र धागा, होइहै नकसान ॥ १ ॥
गर्ब और गुमान छाँड़हु, तजहु और तेवान।
नाहिं थिर सब खाक होइहि, चलत जैसे भान ॥२॥

पाँच और पचीस लैकै, साँच भीतर आन ।
लाव धागा रहै लागा, गगन कर मंडान ॥ ३ ॥
तहाँ सतगुरु बैठु तेहि ढिंग, निरखि करु पहिचान ।
जगजिवन चरनन सीस दै रहु, अनत करु न पयान ।४।

॥ शब्द २१ ॥

अरे मन रहहु रटना लाइ ॥ टेक ॥
नाहिं छूटै प्रीति कबहूं, छाँड़ि दे गफिलाइ ।
जगत माया जार बंधा, अंध सूझि न आइ ॥१॥
हू सचेत अचेत हो नाहिं, लेहु आपु बचाइ ।
चढ़हु गढ़ जहँ गगन गुरु हैं, बैठु थिर ह्वै जाइ॥२॥
है मवासं पास चरनन, काल का डर नाहिं ।
जगजिवनदास निहार मूरति, तकहु इक-टक लाइ३

॥ शब्द २२ ॥

मन इह नाम बिसरि न जाय ॥टेक ॥
मूल मंत्रं इहै आहै, दियो ज्ञान बताइ ।
नामसमता नहीं है कछु, अंत काहु न पाइ ॥१॥
नाम बल ससि भानु रथ, चढ़ि अधर गगन उड़ाइ ।
नाम को बल पाइ हनुमँत, लंक जार्यो जाइ ॥२॥
सेस ब्रह्मा बिस्नु संकर, रहे ताड़ी लाइ ।
जगजीवन बिस्वास करि, गुरु चरन रहु लिपटाइ३

॥ शब्द २३ ॥

मन तुम करहु गगन मँडान ।
त्यागि दे सब जगत आसा, निरख सो निर्बान॥१
सिद्ध साध औ कहत जोगी, भला है अस्थान।
मारि आसन बैठु दृढ़ ह्वै, अनत करु न पयान ॥२
बैठि रहिये पास सतगुर, देखि सिखिये ज्ञान ।
रहहु ऐसे लागि जुग जुग, मानिये परमान ।।३।।
देखि नैनन चाखि अमृत, रहिय ह्वै मस्तान ।
जगजीवन सतगुरू चरनन, सीस करु कुरबान ॥४॥

॥ शब्द २४ ॥

गुरु बलिहारियाँ मैं जाउँ ।। टेक ।।
डोरि लागी पोढ़ि, अब मैं जपहुं तुम्हरा नाउँ ।
नहीं इत उत जात मनुवाँ, गगन बासा गाउँ ।।१।।
महा निर्मल रूप छबि सत, निरखि नैन अन्हाउँ ।
नहीं दुख सुख भर्म ब्यापै, तप्त नीचे आउँ ।।२।।
मारि आसन बैठि थिर ह्वै, काहु नाहिं डेराउँ ।
जगजिवन निर्बान भे, सत सदा संगी आउँ । ३।।

॥ शब्द २५ ॥

मोर दिल भयो मतवारा ।
मैं तै प्रभु के चरनन लाग्यो, बाउर कहै संसारा ।।१॥
अधर बैठि अमृत रस पीवौं, नाम कै करत पुकारा ।
जगजीवन सतगुर को भेंटे, उतरे भव जल पारा॥२॥

॥ शब्द २६ ॥

साधो सुमिरन भजन करो।
मन महँ दुबिधा आनहु नाहीं, सहजहिं ध्यान धरो ॥१॥
धीरज धरि संसय नहिं राखहु, नाम भरोसे रहो।
जगजीवन सतगुरु को भेंटो, भवजल पार तरो ॥२॥

॥ शब्द २७ ॥

देखो री जोगिया रहत कहाँ।
तीनि लोक महँ माया बसत है,
चौथे लोक रहत है तहाँ ॥ १ ॥
अरध सिंहासन बनो अहै री,
जोगी बैठि रहत है तहाँ।
जगजीवन संतन महँ खोजो,
कर बिचार अपने मन महाँ ॥ २ ॥

॥ शब्द २८ ॥

यहु मन गगन मंदिल राखु।
सब्द की चढ़ देखु सीढ़ी, प्रेम रस तहँ चाखु ॥१॥
रहहु दृढ़ करि मारि आसन, मंत्र अजपा भाखु।
मते गुरुमुख होहु तहवाँ, जग्त आस न राखु ॥२॥
पाँच बसि कसि बैठि रहिके, मानु कबहुं न माखु।
ईस अहहि पचीस इन कै, सदा मन हित वाखु ॥३॥
देहु सब बिसराइ करिकै, एही धंधे लागु।
जगजिवनदास निरखि करिकै, नयन दर्सन माँगु ॥४

॥ शब्द २९ ॥

नामहिं बड़े भाग तें पायो ।
नेग जन्म लहि भर्मत बीता,
सूझि बूझि नहिँ आयो ॥१॥
अब की सँवारु इहै करै का,
जो बिगार करि आयो ।
किरपा करि निरबाह करन कहँ,
अवसर भल इह पायो ॥ २ ॥
हूक चूक होत मन मोरे,
जब तब रहि बिसरायो ।
अब निःसंक नाहिं डेर लागत,
जब तें मंत्र सिखायो ॥ ३ ॥
अजपा जपि चढ़ि गयो गगन कहँ,
सतगुर दरस दिखायो ।
जगजीवन बिस्वास बास भे,
चरनन सीस लगायो ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३० ॥

मैं देख्यों निरखि निहारि मुरति पर वारी ॥टेक॥
भा बिस्वास पास बासा करि,
दुनिया सकल बिसारी ।
चमकत दृष्टि बरनि नहिं आवै,
बिनु दीपक उजियारी ॥ १ ॥

नीर पिंड बिनु रूप बिराजत,
रबि ससि की छबि वारी ।
अस निर्गुन निर्बान अमूरति,
सिव बिरंच लाये ताड़ी ॥ २ ॥
सब्द कहत अस प्रगट पुकारे,
बिरले कोउ जन लेहिं बिचारी ।
जगजीवन के सतगुरु समरथ,
सीस ताहि के चरनन वारी॥ ३ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

चरनन में लागी रहिहौं री ॥ टेक ॥
और रूप सब तिरथ बतावै,
जल नहिं पैठ नहैहौं री ॥
रहिहौं बैठि नयन तें निरखत,
अनत न कतहूं जैहौं री ॥ १ ॥
तुमहीं तें मन लाइ रहिहौं,
और नहीं मन अनिहौं री ।
जगजीवन के सतगुरु समरथ,
निर्मल नाम गहि रहिहौं री ॥ २ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

सुरति बसी मन नाम फिरत मतवारी ॥ टेक ॥
चित तौ लाग्यो अपने पिय सों,
डग मग पाँव न जात सँभारी ।

अंतर देखि चुपाइ रहिउँ मैं,
सूरति तुम्हरी रहिउँ निहारी ॥ १ ॥
सूरति पर मूरति वह साँची,
सो मैं रहि हौं नाहिं बिसारी ।
जगजीवन सतगुरु कै मूरति,
सो मैं रहिउँ सँभारी ॥ २ ॥

॥ शब्द २३ ॥

बनत न कतहूं अनत न जाय ।
देखहु चरन सरन ठहराय ॥ १ ॥
नीचे तकत ऊँचे काँ जाय ।
गगन मंडल माँ तब ठहराय ॥ २ ॥
बिन कर चरन पकरि कस जाय ।
सिर नहिं माथ रहै लपटाय ॥ ३ ॥
स्रवन बिहूना सुनि धुनि आय ।
नैन बिहून दरस तकि पाय ॥ ४ ॥
जगजीवन अस मत जेहिं आय ।
मिलि सत मत तब सिद्ध कहाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द २४ ॥

साधो कहै तो कहा न जाय ।
आपन घर मत कोइ न बूझै,
हमहिं कहै समुझाय ॥ १ ॥

पंडित जोगी दंडी तपसी,
बहु बिबाद करैं धाय।
नाहिन नाम की ओर गही तिन्ह,
तिरथ बर्त लौ लाय ॥ २ ॥
नाहिन काहू जीत कहाँ लहि,
कहँ लहि कहै समुझाय।
करै जाइ तस जेहिं जस भावै,
भुगतै तैसे आय ॥ ३ ॥
बिरला कोई भजन करतु है,
चाल चलै दिनताय।
जगजीवन सतगुरु की मूरति,
चरन रहे लपटाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

महिमा प्रभु मो सौं बरनि न जाय ॥ टेक ॥
अनहद बानी मूरति बोलै, सुनहु संत चित लाय।
अनहद ताल पखावज बाजै, तहाँ सुरति चलि जाय ॥१
अवर न रूप कहाँ लहि बरनौं, सब छबि रहे समाय।
जगजीवन साँई कहँ लहि बरनौं, रहे चरनचितलाय २

॥ शब्द ३६ ॥

थीरत्त ब्रत की तजि दे आसा।
सत्त नाम की रटना करि कै,
गगन मँडल चढ़ि देखु तमासा ॥ १ ॥

ताहि मँदिल का अंत नहीं कछु,
  रबी बिहून किरिन परगासा ।
तहाँ निरास बास करि रहिये,
  काहे क भरमत फिरै उदासा ॥ २ ॥
देउँ लखाय छिपावहुं नाहीं,
  जस मैं देखेउँ अपने पासा ।
ऐसा कोऊ सब्द सुनि समुझै,
  कटि अघ कर्म होइ तब दासा ॥ ३ ॥
नैन चाखि दरसन रस पीवै,
  ताहि नहीं है जम की त्रासा ।
जगजिवन दास भरम तेहि नाहीं,
  गुरु के चरन करै सुक्ख बिलासा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

चलु चढ़ीं अटरिया धाई री ।
महल म टहल करै नहिं पाई,
  करिये कौन उपाई री ॥ १ ॥
यहँ तौ बैरी बहुत हमारे,
  तिन तें कछु न बिसाई री ।
पाँच पचीस निस दिन संतावहिं,
  राखा इन अरुझाई री ॥ २ ॥
साँईं तौ निकट बैठि सुख बिलसहि,
  जोतिहि जोति मिलाई री ।

जगजीवन दास अपनाय लेहिं वै,
नाहीं जीव डेराई री ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

नाम बिनु केहि काम का कह जोवनं संसार॥टेक॥
आपनो जग कहत आहै कठिन माया जार॥ १ ॥
लाग धागा गरे बाँधे नाहिं छूटनहार ॥ २ ॥
दास बास बिस्वास जगतं निरखि रूप निहार॥३॥
जगजीवन कोइ अहैं बिरले उतरि होवैं पार ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

नाम रटि रटत तृकुटी गगन चढ़ि आयऊँ ॥टेक॥
मैं तैं पचीस पाँच डोरि एक लायऊँ ।
मैं तौ रँग संग भयो सीस ताहि नायऊँ ॥ १ ॥
सतगुरु से पाय भेद जगत नाहिं आयऊँ ।
मिटेव अँधकार, ज्यों भानु भे प्रकास, निरखि
दृष्टि आयऊँ ॥ २ ॥
जुगति किये रहै ऐसी प्रगट सो बतायऊँ ।
जगजिवन दास अम्मर भे जुग जुग जस गायऊँ ॥३॥

॥ शब्द ४० ॥

भक्त जक्त त्यागि जागि लागि चरन रहु रे ॥टेक॥
जग प्रसंग ध्यान भंग जानि छानि तजु रे ।
रहु इकंत तंत* लागि जानि नाम गहु रे ॥ १ ॥

*तत्व ।

पाँच औ पचीस डोरि पोढ़ि बाँधि रहु रे ।
साधि चित्त नित्त भाव चरनन गुरु परु रे ॥२॥
रहि निहारि निरखि रूप अनत नाहिं टरु रे ।
जुक्ति जोग भक्ति का उपदेस ऐसे करु रे ॥ ३ ॥
पाय खा अघाय अमी जुग जुग नहिं मरु रे ।
जगजिवन दास आस राखु नाहिं फाँस परु रे॥४॥

कर्म भर्म निषेध और उपदेश सतगुरु व शब्द भक्ति का ।

॥ शब्द १ ॥

हे मन थकहु तो तकहु निसान ।
बैठहु मंडफ लाय धुनि धूनी, अनत करु न पयान१
पाँच पचीस लगाय धागा, बाँधि रहु ठहरान ।
नैन दरसन नीर पीवै, चाखि भे मस्तान ॥ २ ॥
नाहिं दुख सुख पवन पानी, नाहिं ससि नहिं भान ।
नाहिं ब्रह्मा सिवं सक्ती, निर्गुनं निरबान ॥ ३ ॥
दियो दुइ कर सीस चरनन, नाहिं भावै आन ।
जगजीवन ते भये गुर मुख, अमर जोग दृढ़ान ।४।

॥ शब्द २ ॥

कर न सुमिरिनी लेहु, अंतर धुनि लावहु रे ।
मैं तैं माला डारि देहु, तुम दीन लीन ह्वै गावहु रे ॥१॥

जो मनुवाँ करि खाक रहहु, वहि काहेक लगावहु रे* ।
चंदन चरन टेक रहु निर्भय, काहेक भौजल आवहु रे २
एहु उपदेस कहि तुमहिं सुनावहुं, मन
अँदेस बिसरावहु रे ।
जगजीवन दास निहारि निरख कै, सुरति म
सुरत मिलावहु रे ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३ ॥

साँईं मोहिं सब कहत अनारी ।
हम कहँ कहल अजान अहैं येइ, चतुर सबै संसारी १
अहै अभेद भेद नहिं जानत, सिखि पढ़ि कहत पुकारी।
देखि करत सो आवत नाहीं, डारिन भजन बिगारी २
कहा कहौं मन समुझि रहत हौं, देख्यौं दृष्टि पसारी।
समुझाये कोइ मानत नाहीं, कपट बहुत अधिकारी३
बिरले कोइ जन करत बंदगी, मैं तैं डारत मारी ।
जगजीवन गुरु चरन सीस दै, निरखत रूप निहारी४

॥ शब्द ४ ॥

संतन कह्यौ रमज† से बानी ।
तत्त सार बताय दीन्ह्यो, काहू भेद न जानी ॥१॥
बहुतक अंधे बंधे माया, आहहिं गर्ब गुमानी ।
समुझाये जे समुझत नाहीं, होइहि तिन की हानी२

*जब मन को खाक कर डाला तो भभूत लगाने का क्या काम है ।

†भेद ।

साधन की गति कहि नहिं आवै, केहि
मुख कहौं बखानी ।
जगजीवन चरनन तें लागे, निरखि जोति निर्बानी ॥३॥

॥ शब्द ५ ॥

दुनियाँ हमहिं सिखावत ज्ञान ।
आपु तौ भवजाल भूले, हमहिं कहै हैवान ॥ १ ॥
गुनन तें मन गूंथि करि कै, करत प्रगट बखान ।
नाहिं बूझत सूझ नाहीं, लागि नहिं हिय बान ॥२॥
धाइ धाइ सिखाइ औरै, दोऊ भरम भुलान ।
करत अहिं अस देखि नैनन, प्रगट भाखौं ज्ञान॥३॥
बहुत फूलि कै भूलि परि हहिं, होइ है नुकसान ।
जगजीवन जानत अहै सब, नाहिं कछू छिपान॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

साधो नाम भजन जिन ठाना ।
केतो कोइ समुझाय सिखावत,
मनहिं न आवत आना ॥ १ ॥
तीरथ ब्रत और दान तपस्या,
नाहीं एकौ माना ।
सब बिसराइ मनहिं नहिं आवत,
ध्यान धरै निर्बाना ॥ २ ॥
निरखत निर्मल जोति सदा वै,
तज दिये पानि* पखाना† ।

*पानी । †पत्थर ।

तस आचार बिचार हैं उनके,
काहू गति नहिं जाना ॥ ३ ॥
सतगुरु पासहिं बास किहे हहिं,
नाहीं और तेवाना* ।
जगजीवन गुरु चरनन लागे,
आपुहिं करैं निभाना† ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

साधो बिन किरपा भक्ति न होय ।
रात दिन जो करै बंदगी, कबूल परै नहिं सोय॥१॥
जज्ञ दान उदान‡ बास करै, कंदमूरि भखि सोय ।
बरत रहै अस्नान तीरथ, भक्ति तबहुं न होय ॥२॥
पढ़ै चारौ बेद बिद्या, ज्ञान कबिता होय ।
मौन ह्वै कै लाय तारी, भक्ति तबहुं न होय ॥ ३ ॥
काया कासी जाय कल्पै, डारि सर्बस खोय ।
द्वारिका भुज लेय छापा, भक्ति तबहुं न होय ॥४॥
मुड़ाइ मूड़ औ पहिरि माला, भ्रमत फिरै सब कोय ।
घीच§ तूरै करि तपस्या, भक्ति तबहुं न होय ॥५॥
पंच अग्नि तन दहि झूल झूला, पवन भच्छै सोय ।
बाँह तूरै रहहि ठाढ़े, भक्ति तबहुं न होय ॥ ६ ॥
लाइ अंग बिभूति जोगी, नारि रस नहिं होय ।
तजै माया मुलुक सर्बस, भक्ति तबहुं न होय ॥ ७ ॥

* फ़िक्र । † निबाह । ‡ पाँच मुख्य पवन जिन से शरीर की स्थिति है यह हैं -प्रान, अपान, व्यान, उदान, समान । § प्रानायाम में चिबुक लगाना ।

कृपा भै दिनताइ आई, सुमन मन भा सोय ।
जगजिवन डोरी लाय पोढ़ी, रह्यो चरन समोय॥८॥

॥ शब्द ८ ॥

साधो नाम चाखि बैाराना ॥ टेक ॥
लागे रहैं चरन तें निसि दिन, भावै और न आना ।
तजो अचार बिचार जग्त को, सब तें रहि बिलगाना १
उन कै गति कोउ जानत नाहीं, को करि सकै
बखाना ।
मरि कै अमर भये हैं सोई, भये हैं सिद्ध निमाना॥२॥
हेत आस नहिं राखैं काहू, गुरु निरखहिं निरबाना ।
जगजीवन वै साँईं मिलिगे, परगट करहुं बखाना॥३॥

॥ शब्द ९ ॥

साधो देखहु अंतर माहीं ।
भौंवरि भवन दिहे रहि रहिये,
अवर अहै कछु नाहीं ॥ १ ॥
बड़ बिस्तार अहै काया का,
अंत खोज कछु नाहीं ।
जिन खोजा पाया काया महँ,
बहुतेक भर्म भुलाहीं ॥ २ ॥
पाँच पचीस डोरि बसि करिये,
चक्षु गुरु आहै ताहीं ।

जगजीवन निर्बानी मूरति,
मिलिगे सूरत माहीं ॥ ३ ॥

॥ शब्द १० ॥

बहुतक देखी देखा करहीं।
जोग जुक्ति कछु आवै नाहीं,
अंत भर्म महँ परहीं ॥ १ ॥
गे भरुहाइ* अस्तुति जेइ कीन्हा,
मनहिं समुझि ना परई।
रहनी गहनी आवै नाहीं,
सब्द कहे तें लरई ॥ २ ॥
नहीं बिबेक कहै कछु औरै,
और ज्ञान कथि करई।
सूझि बूझि कछु आवै नाहीं,
भजन न एकौ सरई ॥ ३ ॥
कहा हमार जो मानै कोई,
सिद्धि सत्त चित धरई।
जगजीवन जो कहा न मानै,
भार† जाय सो परई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ११ ॥

साधो भक्ति सहजहि ध्यान।
मनहिं ब्यापत साँचु नाहीं, कहा प्रात अन्हान ॥१॥

*उबल पड़े। †भाड़।

कहा कंठो कंठ बाँधे, सेल्हि मुद्रा कान ।
कहा माला लै सुमिरनी, हिये नहिं पहिचान ॥ २ ॥
कहा तिलक लिलार दीन्हे, गूदरी निरबान ।
कहा भस्महिं अँग लाये, नाम नाहीं जान ॥ ३ ॥
कहा ब्रत तप दूध पीवे, त्यागि गृह बिलगान ।
कँदमूरहिं खाहिं जंगल, नाहिं जो बहु ज्ञान ॥४॥
ठाढ़ बैठे घींच तूरहिं, तकत हैं असमान ।
बृथा सब परतीत बिनु है, भ्रम भूले हैवान ॥ ५ ॥
खोज काया करहु थिर मन, त्यागि कपट सयान ।
भजहु अंतर नाम वाहै, राम सत्त प्रमान ॥ ६ ॥
लाउ रसना नाहिं बिसरै, प्रगट करु न बखान ।
जगजीवन बिस्वास निरमल, होहु जैसे भान ॥७॥

॥ शब्द १२ ॥

बौरे मन को नहिं भरमाव ।
तीन लोक के करता साँई, ताहि सोँ ध्यान लगाव॥१
तीरथ कोटि साज जिन कीन्हेउ, सो संतन हिये आव।
चढ़ि कै गगन देखु सूरति को, ताहि काँ सीस नवाव॥२॥
सूरति सत्त प्रेम रस पानी, ताहि में चित अन्हवाव ।
अमर होहु भवसागर उतरहु, नहिं आवहु नहिं जाव३
सतगुरु सत्त कहा यहि बानी, अलख नाम
धुनि लाव ।
जगजीवन साहब की छबि में, आपनि सुरति समाव४

॥ शब्द १३ ॥

मन गृह ग्राम यह अस्थान ।
सात दीप नव खंड पृथ्वी, सिर उर तेहि माँ जान ॥१॥
तीनि लोक बिस्तार है तेहिं, रमत गन ससि भान ।
चौथ इहै बनाय दीन्ह्यौ, संत राखत ध्यान ॥ २ ॥
दरवाज नौ दस प्रगट आहैं, काहु तें न छिपान ।
रमत तेहि के ब्रह्म भीतर, नहीं कहुं बिलगान ॥३॥
काया भीतर खेल खेलहु, अनत करु न पयान ।
बाहर तो सब देखिबे को, घट अहै सो प्रमान ॥४॥
कहत हैाँ उपदेस छोंडु अँदेस रहु ठहरान ।
जगजीवन निर्बान सतगुरु, चरन रहु लिपटान ॥५॥

॥ शब्द १४ ॥

मन तुम रहहु चरन सरनाई ।
यहि काया का अंत खोज नाहिं, काहू भेद न पाई ॥१॥
तीनि लोक काया रचि दीन्ह्यौ, चौथा दीन्ह बनाई ।
तीरथ कोटि अहैं याही में, संतन दीन्ह बताई ॥२॥
अजपा जाप जपत रहु निसु दिन, प्रगट न देहु जनाई ।
इहि तें मंत्र नहीं है एकौ, भर्म न परहु भुलाई ॥३॥
सेस महेस बिस्नु औ ब्रह्मा, रहे हैं ध्यान लगाई ।
निर्गुन निरंकार वह मूरति, तेहि माँ रहौ समाई ॥४
रहु ठहराय गगन करु बासा, निरखि देखु निरथाई ।
जगजीवन सतगुरु की सूरति, रवि ससि
छबि छिपि जाई ॥५॥

॥ शब्द १५ ॥

साधो भेष बाँधि गफिलाने ।
रहै अभेष भेद तब छूटहि, सहज रीति मन जाने॥१॥
जब तें माला कंठी पहिरी, गर्ब भयो इतराने ।
साखी सब्द बहुत सिखि लीन्हेउ, बाद
बिबादहिं ठाने ॥ २ ॥
परखहिं नाहिं फिरहिं परखावत, आपन मंत्र बखाने।
भजहिं नाहिं बसि परे मोह के, अन्त काल पछिताने३
बहुतक देखे कपट रीति महँ, दाम के काम सयाने ।
अहैं असिद्ध मति करैं सिद्ध का, एहि परि
पाप बिलाने॥४॥
दीन लीन होइ सहजहिं सुमिरै, सुमति सील रहे माने।
जगजीवन तब भक्त कहावै, ते एहि
कलि ठहराने ॥ ५ ॥

॥ शब्द १६ ॥

कोउ बिन भजन तरिहै नाहिं ।
करै जाय अचार केतौ, प्रात नित्त अन्हाहिं ॥ १ ॥
दान पुन्यं करि तपस्या, व्रत बहुत रहाहिं ।
त्यागि बस्ती वैठि बन महँ, कंदमूरहिं खाहिं ॥२॥
पाठ करि पढ़ि बहुत बिद्या, रैन दिनहिं बकाहिं ।
गाय बहुत बजाइ बाजा, मनहिं समुझत नाहिं॥३॥
करहिं स्वाँसा बंद कष्टित, भाँड़ की गति आहिं ।
साधि पवन चढ़ाय गगनहिं, कमल उलटै नाहिं॥४॥

साध नहिं केहु कीन ऐसे, सिखे बहुत कहाहिं ।
प्रीति रस मन नाहिं उपजत, परे ते भव माहिं ॥५॥
जस सँजोग बियोग तैसे, तत अच्छर दुइ आहिं ।
रटत अंतर भेंट गुरु तें, मंत्र अजपा माहिं ॥ ६ ॥
कहौं प्रगट पुकारि जेहि के, प्रीति अंतर आहिं ।
जगजिवन दास रीति अस, तब चरन महँ
मिलि जाहिं ॥ ७ ॥

॥ शब्द १७ ॥

चरन सरन रहौं, कहूं अंतै नाहिं जाऊँ॥ टेक ॥
रही पास किहे बास, त्यागि सर्ब और आस,
भजत रहौं नाऊँ ॥ २ ॥
तीनि त्यागि चैाथ तत्त, पाँह बैठि निरभय ह्वै,
तकौं ना उराऊँ* ॥ ३ ॥
मारि आसन रहौं बैठि, नैनन टक लाय डोरि,
निरमल सत नीर पाइ, नित्त सो अन्हाऊँ॥४॥
जुग जुग जग बैठि संग, मगन रसं तेहि रंग,
जगजिवन दास सतगुरु सो, चेला ताहि क आऊँ† ५

॥ शब्द १८ ॥

सब खाकहि मिलिहै रे भाई ।
किया चहहु कर लेहु बंदगी, मन तें छाँड़हु गफिलाई१
भूलै फूलै देखि न दौलत, काहु क संग न जाई ।
पैदा भये निपैद भये ते, केहु की खबर न केहू पाई ॥२॥

*दूसरी ओर । †हूं ।

कहँ धौं गये कहाँ धौं वह घर, कहाँ जाइ धौं
रहे समाई।
छत्री जोधा जोगी दानौ*, काल लीन्ह सब खाई॥३॥
बचा नहीं कोउ ना कोइ बचिहै, सब्द कहत गोहराई।
जगजिवन दास नाम गहि उबरे, सतगुर
चरनन सरनाई॥४॥

॥ शब्द १९ ॥

बहु पद जोरि जोरि करि गावहिं।
साधन कहा सो काटि कपटि† कै,
अपन कहा गोहरावहिं॥ १ ॥
निंदा करहिं बिबाद जहाँ तहँ,
बक्ता बड़े कहावहिं।
आपु अंध कुछ चेतत नाहीं,
औरन अर्थ बतावहिं॥ २ ॥
जो कोउ नाम का भजन करत है,
तेहि काँ कहि भरमावहिं।
माला मुद्रा भेष किये बहु,
जग परमोधि‡ पुजावहिं॥ ३ ॥
जहँ ते आये सो सुधि नाहीं,
झगरे जन्म गँवावहिं।
जगजीवन ते निन्दक बादी,
बास नर्क महँ पावहिं॥ ४ ॥

*राक्षस। †काट छाँट कर। ‡राजी कर के।

॥ शब्द २० ॥

अंतर जो कोउ नाम धुनि लावै ।
अजपा रसना सदा लागि रहै, नाहीं भेद बतावै॥१॥
इत उत आस निरास होय जब, मन अस्थिर लै पावै ।
रहै ठहराय सिखर ह्वै सीतल, निरखि रूप
तब आवै ॥ २ ॥
देखत अहै सुनत है सरवन, काहेक कहि गोहरावै ।
भयो मस्त रस पाय अमृतै, काहेक घंट बजावै॥३॥
तब बैराग भयो अनुरागी, काल निकट नहिं आवै ।
जगजीवन सतगुरु की किरपा, नहिं आवै नहिं जावै॥४॥

॥ शब्द २१ ॥

अब तौ ज्ञान कथै को भाई ।
सब्द कहत सो मानस नाहीं, केतौ कहि समुझाई ॥१
भेष जगत सब भूले मैं तैं, सुमति न हिये समाई ।
बहु जलधर बरषहिं पखान पर, सोखत नाहीं जाई*॥२
देखि परत सब हिये सबहिन का, सुरति नाहिं ठहराई
जहाँ तहाँ भरमत बीतत है, नाहीं भजन दृढ़ाई॥३॥

*जैसे बादल छिनताहीं मेंह बरसाते हैं पर पत्थर के भीतर नहीं धसता इसी तरह जगत भेष को जितना चाहे उपदेश करो पर हृदय में असर नहीं करता ।

बहु अभिमान गुमान गर्ब तें, करहिं बाद अधिकाई ।
सो करतूति भुगुति है काया, परै नर्क में जाई ॥४॥
कोइ कोइ जन मन को थिर राखैं, अंतर
रटनि लगाई ।
जगजीवन ते भक्त कहाये, सतगुरु लीन्ह सिखाई ॥५॥

॥ शब्द २२ ॥

और कछु मंत्र नाम सम नाहिं ।
चलै न जिभ्या मुख नहिं बोलै, रटत रहै मन माहिं १
कोउ कासी कोउ जात द्वारकै, हित कर तीरथ न्हाहिं ।
कोउ ब्रत दान अचार करै बहु, कोऊ तपस्यहिं जाहिं २
तूरत बाहैं घींच गगन मुख*, उलटी धूम घुटाहिं† ।
पीवत दूध दूब फल बन के, कंद मूरि खनि‡ खाहिं ३
कोउ रहैं ठाढ़े कोउ रहैं बैठे, कोउ होइ जोगी
जोग कराहिं ।
कोउ जागैं निसिदिन नहिं सोवैं, कोउ दम साध रहाहिं ४
जज्ञ राग रस निर्त रंग कबि, ज्ञानी ज्ञान कथाहिं ।
पंडित कथा पुरान बखानहिं, पढ़ते जन्म सिराहिं§ ५
माला मुद्रा भस्म लगावहिं, चंदन तिलक कराहिं ।
सालिग्राम औ पीतर पुतरी, पूजि पूजि हरषाहिं ॥६॥

*ऊर्द्धबाँहु अर्थात् आसमान की तरफ़ बाँह को उठा कर सुखा डालते हैं । †उलटे टँग कर धुआँ पीते हैं । ‡खोद कर । §बिताते हैं ।

एह सब करै सरै न भजन बिन, मन थिर होवै नाहिं ।
परहिं आय भौजाल फेरि फिरि, समुझि
समुझि पछिताहिं ॥ ७ ॥
सहज सुभाव रहै कौनिउ विधि, अंतर बिसरै नाहिं ।
जस जोगी तस अहैं सँजोर्ग, भक्त सोई जग माहिं ॥८
सदा बिस्वास नाम की आसा, तज विवाद बक ताहिं ।
जगजीवन सतगुर के चरनन, अंतर अंतर नाहिं ॥९॥

॥ शब्द २३ ॥

सब जग देखि देखि कै भूला ।
साधन कै गति पावत नाहीं, पड़े भर्म के सूला ॥१॥
करत साध सो करत देखि कै, मन आपन नहिं तौला ।
दिन दुइ चारि दिखाइन सब कहँ, झूलहिं
झूल हिंडोला ॥ २ ॥
लागत नाहिं राम तें भागत, तजि कै नाम अमोला ।
हूँ गे अस्त उदय है नाहीं, ज्यौं पानी क बबूला ३
परपंची परपंच करहिं जे, परा ते भव प्रतिकूला ।
जगजीवन एहि देखि तमासा, सतगुर छवि
गहि मूला ॥ ४ ॥

॥ शब्द २४ ॥

सब जग दीन्ह धंधे लाय ॥टेक॥
जहाँ तहाँ लगाय धागा, सुद्धि गई भुलाय ।
जारिडारि संसार माया, लीन्ह सबहिं बिरुझाय* १

*ऐसा उलझना कि फिर न छूटै ।

बिना दाया नाहिं छूटै, करै कोटि उपाय ।
पाँच और पचीस मिलि कै, अपथ गैल चलाय॥२॥
चुभे पाँवन कर्म काँटा, दरद भे अधिकाय ।
गये गल पचि नाम बिनु बहि, ज्यौं बुल्ला
बुंद बिलाय ॥३॥
करि कृपा मन खैंचि लीन्ह्यौ, राखि लइ सरनाय ।
जगजीवन सोइ भयो निर्भय, काल तें न डेराय ॥४॥

॥ शब्द २५ ॥

भे जे नाम भजि मस्तान ।
सदा लागी रहत तारी नाहिं सूझत आन ॥१॥
दीनता गहि सीस वारे तजे गर्ब गुमान ।
अबल कोऊ कहै नहिं तेहिं महा है बलवान ॥२॥
काल तिन तें करत बिनती रहत सदा हैरान ।
कहत सब्द पुकारि कै सुनि मानि ले परमान॥३॥
रहत नीचे तकत ठाढ़े जहँ सतगुर निर्बान ।
जगजीवन गहि चरन मन तें, भये ताहि समान॥४॥

॥ शब्द २६ ॥

कर मुकाम जहँ निर्गुन नाम ।
ए मन बैठि रहौ तेहिं के ढिग,
तबहीं सुख पैहौ बिस्राम ॥ १ ॥

उत्तम मध्यम तहँवाँ कछु नाहिं,
नाहिं छाँह नहिं आहै घाम ।
पानि पवन उहँ भूख प्यास नहिं,
नाहीं दुख नहिं अहै अराम ॥ २ ॥
झलमल निर्मल निरख देखु तहँ,
उत्तम बना गगन भल ग्राम ।
जगजीवन डर नाहिं काल का,
सतगुर चरन तें राखहु काम ॥ ३ ॥

॥ शब्द २७ ॥

मन महँ समुझि भजहु रे भाई ।
बिना नाम नाहीं सुख पैहौ, छाँड़ि देहु गफिलाई १
बादसाह तख्त चढ़ि भूला, सूबा करत सुबाई ।
राजा राज-काज महँ भूला, कबहुं न बंदगी आई २
साहूकार दाम तकि भूला, दाया जिन्ह बिसराई ।
साँई खैंचि लीन्ह सब माया, जहँ तहँ गयो बिलाई ३
जोगी जोग जुक्ति महँ भूला, पँडित करि पँडिताई ।
भोगी भोग पाप महँ भूला, सुधि बुधि गै बिसराई ४
तपसी करत तपस्या भूला, मनुवाँ कसा न जाई ।
पाँच साँचु माँ आवत नाहीं, मिले बबूरिहिं* जाई ५
षट-दरसन दुनियाँ सब भरमत, जहँ तहँ तीरथ न्हाई ।
घटत न कर्म रहत अघ लादे, मन का मैल न जाई ६

*बबूल यानी काँटे में ।

बिना नाम कोइ पार न पाइहि, कहे देत गोहराई।
जगजीवन सतगुर के चरनन, कबहुं न मन बिसराई ७

॥ शब्द २८ ॥

अरे मन अंतै कतहुं न धाव ।
रहै अंतर प्रीत लागी, जगत सब बिसराव ॥ १ ॥
तीन चौथ बनाय दीन्ह्यौ, नाहिं जान्यौ भाव ।
पाय औसर चूकु नाहीं, इहै आहै दाव ॥ २ ॥
तीर्थ ब्रत और दान पुन्यं, एह न मन में लाव ।
एइ सब अहैं गुलाम भक्त के, सीस नाहीं नाव ।३।
त्यागु सर्बस आस मन तें, गगन गाँव बसाव ।
जगजिवनदास निहारि मूरति, नयन दरसन पाव४

॥ शब्द २९ ॥

जो कोइ यहि बिधि तीरथ न्हाय ॥टेक॥
मन का मैल लेइ मिसाय*, तब तिरबेनी घाट अन्हाय१
माया मोह दान दै डारि, काम क्रोध मद देइ लुटाय२
काहे क कासी गंगहिं जाय, नाम तें मैलहिं डारछुड़ाय ३
जगजीवन दास कहै गोहराय, बिन सतगुरु
कोउ पार न जाय ॥४॥

॥ शब्द ३० ॥

ऐसी डोरि लगावहु पोढ़ि ।
टूटै डोरि लेहु फिरि जोरि ॥ १ ॥

* उबटन लगा कर साफ़ करना ।

जब लगि मुख तें कहिये बात ।
तब लगि नाम बिसरि मन जात ॥ २ ॥
जग प्रपंच संगति नहिं करिये ।
हिये नाम की रटना धरिये ॥ ३ ॥
चित माँ चित जो राखै लाय ।
ता पर काल कि कछु न बसाय ॥ ४ ॥
जगजीवन के चरन अधार ।
सतगुरु संत उतारहिं पार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

बिन वहि नाम तरै कोउ नाहीं ।
देखहु समुझि बूझि मन माहीं ॥ १ ॥
तीरथ व्रत बहु भाँति कराय ।
जो पै अन्तर देखि न पाय ॥ २ ॥
जल तन धोय मैलि गा धोय ।
मन यहु नाम तें निर्मल होय ॥ ३ ॥
भूले करि षट कर्म अचार ।
याही तें भूला संसार ॥ ४ ॥
सहज डोरि जो राखै लाय ।
अंतर भजि तब भक्त कहाय ॥ ५ ॥
झूठ साँच बहुत नहिं बोलै ।
रहि जग अपने मारग डोलै ॥ ६ ॥

रहै छिपित नहिं देइ जनाय ।
तब भजि अंतर भक्त कहाय ॥ ७ ॥
गर्ब गुमान त्यागि चलै चालू ।
दुख तेहिं देइ न कबहूं कालू ॥ ८ ॥
जगजीवन निर्मल निर्बान ।
सतगुरु चरन रहै धरि ध्यान ॥ ९ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

मनुवाँ रहहु जिकिरि लगाय ।
और आस न राखु एकौ, देहु सब बिसराय ॥ १ ॥
कथा ग्रंथ पुकारि भाषैं, देत संत सिखाय ।
नाहिं एहि तें कछू उत्तम, त्यागि दे भ्रमताय ॥ २ ॥
तीन त्यागहु चलौ चौथे, सहर अजब बनाय ।
राति नहिं तहँ दिवस नाहीं, अजब दिप्त सुहाय ॥३॥
बैठि गुरु सत तख्त पर, तहँ रहो सीस नवाय ।
जगजीवन तहँ निरखि निर्मल, बरनि नाहीं जाय॥४॥

॥ शब्द ३३ ॥

सत्त नामं तत्त निर्मल, सुमिरहु मन लाइ ।
करै जाय अनेग कोइ कछु, अवर नहिं समताइ ॥१॥
दान पुन्यं जज्ञ ब्रत तप, तिरथ कोटि अन्हाइ ।
पार नहिं वहि नाम बिनु, सत सब्द भाषत गाइ॥२॥
पढ़ै कोउ पुरान पाठं, ज्ञान कथि कबिताइ ।
किरति परगट कहन कहिये, नाहिं यह भगताइ ॥३॥

जानि छानि जिन नाम रसना अनत ना चित जाइ।
जगजिवन दास ते भक्त भे गुरु चरन रहे लिपटाइ॥४॥

॥ शब्द ३४ ॥

ऐ मन जोगी बैठि मढ़ी जपु राम।
करता की गति काहु न पाई।
नौ खिरकी दस दियो बनाई ॥ १ ॥
तीरथ ब्रत कहँ कतहुं न धाव।
नेम अचार बिचार बहाव ॥ २ ॥
पचीस जोगिनी चेला पाँच।
तिन पर रहै आपनी आँच ॥ ३ ॥
जगन्नाथ तैं अपनै जानु।
काया कासी और न आनु ॥ ४ ॥
प्राग प्रान तिरबेनी बास।
श्रौर न दूजी राखहु आस ॥ ५ ॥
अजबै मढ़ी बनी चैागान।
दृढ़ आसन निरखहु निर्बान ॥ ६ ॥
अमी नीर ले नैन तें पाइ।
कर्म भर्म अघ सब्र मिटि जाइ ॥ ७ ॥
जगजीवन यह मति अनुरागु।
आदि अंत गुरु चरनन लागु ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

सुमिरहु मन राम नाम चित लाइ ।
बिन वहि नाम नाहिं कोउ तरिहै, कहत अहैं गोहराइ १
जज्ञ दान ब्रत तीर्थ तपस्या, जग्त भर्म सब आइ* ।
बाहर ढूंढ़े नहिं कछु मिलिहै, रहु अंतर ठहराइ ॥२॥
धावहु ना कहुं आवहु थिर है, बाहर फिकिर बहाइ ।
कर परतीत रीत संतन की, मिलिहैं तबहीं साँइँ॥३॥
कहे सुने नहिं भटकसि कबहूं, जग्त बदी अधिकाइ।
सिखिपढ़ि सुनिकै बातैं बहुती, भजन मनहिं बिसराइ४
रहु जानत मन नाहिं जनावहु, रहहु अभेष छिपाइ।
जगजीवन सतगुरु काँ निरखहु, चरन
रहहु लिपटाइ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

सतगुरु तुम मोहिं सिखायो ।
सो सिखि मैं सोई गायो ॥ १ ॥
अब मोहिं आपन करि लीन्हा ।
मैं सीस चरन तर दीन्हा ॥ २ ॥
मैं आदि अंत का आऊँ† ।
अब सुमिरत आहूं नाऊँ ॥ ३ ॥
एहि कठिन नदी है धारा ।
तुम अब कि उतारहु पारा ॥ ४ ॥

*है । †हूं ।

जगजीवन दास तुम्हारा ।
मैं सीस चरन पर वारा ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

साधो का कहि सब्द सुनावै ।
सब्द है साँच माँच* कहि भाषै,
काहु के मन नहिं आवै ॥ १ ॥
जग सब अंध कुमारग डोलहि,
चेत हेत नहिं लावै ।
हिय कठोर पाषान अहै बहु,
नाहीं सब्द समावै ॥ २ ॥
भेख अलेख† बहुत है दुनियाँ,
करि कै स्वाँग दिखावै ।
आसा झूठ लाय सब बाँधा,
नाहिं निरंतर गावै ॥ ३ ॥
कोई तीरथ बरत तपस्या,
जहाँ तहाँ कहँ धावै ।
जल पषान की आहै पूजा,
भ्रमि भ्रमि जन्म गँवावै ॥ ४ ॥
अजपा जपत रहै बिन जिभ्या,
कबहुं नाहिं बिसरावै ।
जगजीवन पहुंचा चौथे पद,
गुरु कहँ सीस नवावै ॥ ५ ॥

*सच मुच । †बेहिसाब ।

॥ शब्द ३८ ॥

नाम मंत्र सम नाहीं कोय ।
प्रगट पुकारि कहत हौं सोय ॥ १ ॥
अंतर डोरी राखहु लाय ।
सोवत जागत बिसरि न जाय ॥ २ ॥
बोलहु नाहिं बहुत बतलाहु ।
अंतर भजि ले याहै लाहु* ॥ ३ ॥
जो पै कोटिउ तिरथ अन्हाय ।
मन का मैल तबहुं नहिं जाय ॥ ४ ॥
करै तपस्या तन काँ जारी ।
नाम बिना गै सबै बिगारी ॥ ५ ॥
दूध पियहि तस मूरिहि खाय ।
भावै घर माँ खाय अघाय ॥ ६ ॥
जगजीवन बिस्वास बस राम ।
तेहि कौ सुफल सिद्ध भा काम ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

राम क भजन करहु मन माहीं
जीवन जन्म सुफल जग माहीं ॥ १ ॥
भूलहु नाम न तब सुख पाय ।
राम मंत्र सुमिरहु मन लाय ॥ २ ॥
बिनु सुमिरन गति मुक्ति न होय ।
सब्द सत्य कहि भाखत सोय ॥ ३ ॥

*लाभ ।

सुमिरत ब्रह्मा सुमिरत सेस।
सुमिरत गौरी और गनेस ॥ ४ ॥
सुमिरत बिस्नु जोति मन जानी।
निर्गुन निर्मल सो पहिचानी ॥ ५ ॥
जगजीवन सतगुरु की ध्यान।
निसु दिन रहौं चरन लिपटान ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४० ॥

सत मत कहत अहौं सुनाइ।
तत्त सार बिचार कीन्ह्यो नाम रटना लाइ॥ १ ॥
बेद ग्रंथन छानि लीन्ह्यो भर्म नाहिं भुलाइ।
बैठि दृढ़ ह्वै जुक्ति माहीं आस सब बिसराइ ॥ २ ॥
नाम की गति कहौं कहँ लौं सेस संभू गाइ।
करत बरनन ब्रह्म मन महँ बेद परगट गाइ ॥ ३ ॥
तीनि त्यागै साध जन कोइ चौथ का घर पाइ।
जगजीवन गुरु चरन गहि कै बैठु थिर ह्वै जाइ ॥४॥

॥ शब्द ४१ ॥

मन महँ जाइ फकीरी करना।
रहै एकंत तंत तें लागा, राग निर्त नहिं सुनना॥१॥
कथा चारचा पढ़ै सुनै नहिं, नाहिं बहुत बक बोलना।
ना थिर रहै जहाँ तहँ धावै, यह मन अहै हिंडोलना २
मैं तैं गर्ब गुमान बिबादहिं, सबै दूर यह करना।
सीतल दीन रहै मरि अंतर, गहै नाम की सरना॥३॥

जल पषान की करै आस नहिं, आहै सकल भरमना।
जगजीवन दास निहारि निरखि कै, गहि रहु
गुरु की सरना॥ ४ ॥

॥ शब्द ४२ ॥

साधो सुमिरहु नाम रसाला।
बकबादी बेबादी* निंदक।
तेहि का मुंह करु काला॥१॥
साखी सब्द जोरि कै लीन्ह।
जहाँ तहाँ लै झगरा कीन्ह ॥ २ ॥
भजहीं नाहिं बकहिं अधिकार।
बाझि रहे माया के जार ॥ ३ ॥
सूकर स्वान बुद्धि तेहिं आइ† ।
नहिं उद्धार नर्क परै जाइ ॥ ४ ॥
करहीं बहुत गरब अभिमान।
ता तें बिसरि गयो वह ज्ञान ॥ ५ ॥
भेष अलेख अंत कछु नाहीं।
तिन तो गर्ब करैं मन माहीं॥ ६ ॥
करि दिनताय नवै सिर नाइ।
तबहिं सुमति कछु उपजै आइ ॥ ७ ॥
जगजीवन दास देत उपदेस।
नाम भजहु तब मिटै अँदेस ॥ ८ ॥

*बिबादी। †है।

॥ शब्द ४३ ॥

अंतर सुमिरहु नामहीं बिसरावहु नाहीं ।
मूल मंत्र ईहै अहै बसि रहु तेहिं माहीं ॥ १ ॥
देखहु दृष्टि पसारि कै कोऊ थिर नाहीं ।
नीरहिं तें पैदा भये फिर खाक मिलाहीं ॥ २ ॥
कर्म फाँस सब जग पर्यौ कोउ छूटत नाहीं ।
छूटे कोउ कोउ दास जन जुक्ती जिन माहीं ॥ ३ ॥
डोरी पीढ़ि लगाइ कै सतगुरुहिं मिलाहीं ।
जगजीवन अस निरखि कै चरनन लिपटाहीं ॥४॥

॥ शब्द ४४ ॥

ए मन नामहिं सुमिरत रहौ ।
परगट भेद न काहू कहौ ॥ १ ॥
परगट कहे नाहिं भल होइ ।
सुमिरन मन तें जाइह खोइ ॥ २ ॥
परपंची निंदक तें दूरी ।
तब सुभ भजन होइ भरपूरी ॥ ३ ॥
बकबादी ब्रीबादी त्यागू ।
सत्त सुकृत नामहिं में लागू ॥ ४ ॥
यहि तें सुख नाहीं अधिकारा ।
कहै पुरान औ ज्ञान बिचारा ॥ ५ ॥
सबहिन कहा पिया सो जिया ।
जिन केहु भक्ति माँगि कै लिया ॥ ६ ॥

सतगुरु के चरनन लिपटाना ।
साधू सोई भे निरबाना ॥ ७ ॥
जगजीवन करि प्रगट बखान ।
गुरु के चरन तजि भजहु न आन ॥ ८ ॥

॥ शब्द ४५ ॥

इत उत आसा देहु त्यागि ।
सत्त सुकृत तें रहहु लागि ॥ १ ॥
मन तुम नाम रटहु रट लाइ ।
रहु सचेत नहिं बिसरि जाइ ॥ २ ॥
काया भीतर तीरथ कोटि ।
जानि परत नहिं मन की खोटि ॥ ३ ॥
ठाढ़े बैठे पग चलाइ ।
तस पौढ़े* चित अनत न जाइ ॥ ४ ॥
रात दिवस धुनि छूटै नाहिं ।
ऐसे जपत रहहु मन माहिं ॥ ५ ॥
गगन पवन गहि करहु पयान ।
तहवाँ बैठि रहहु निरबान ॥ ६ ॥
गुरु के चरन गहहु लिपटाइ ।
निरखहु सूरति सीस उठाइ ॥ ७ ॥
या है ब्यापि रहे सब माहिं ।
देखत न्यारा कतहूं नाहिं ॥ ८ ॥
जगजीवन कहि मथि पुरान ।
यहि तें सत मत और न आन ॥ ९ ॥

*लेटे ।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवैं उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजैं जिस में वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावैं और जो दुर्लभ ग्रंथ संतबानी के उन को मिलैं उन्हें भेज कर इस परोपकार के काम में सहायता करैं ।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनों से इन पुस्तकों के छापने में बहुत व्यय होता है तौ भी सर्व साधारन के उपकार हेतु दाम आध आना फी आठ पृष्ठ से अधिक किसी का नहीं रक्खा गया है। जो लोग सबसक्रैबर अर्थात पक्के गाहक होकर कुछ पेशगी जमा कर देंगे जिस की तादाद दो रुपये से कम न हो उन को डाक महसूल और मनी-आर्डर कमिशन भी हर पुस्तक पर न देना पड़ेगा और जो पुस्तकें अब तक छप गई हैं और जिन के नाम आगे लिखे हैं सब एक साथ लेने से पक्के गाहकों के लिये दाम में एक रुपये की कमी कर दी जायगी और डाक महसूल भी न लिया जायगा- पेशगी दाम न भेजने वाले सबसक्रैबरों के लिये केवल डाक महसूल छोड़ दिया जायगा ।

अब भीखा साहब, बिहार के दरिया साहब और दया बाई की बानी और गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी हाथ में लीगई है ।

मैनेजर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

इलाहाबाद ।

फ़िहरिस्त पुस्तकों की जो छप गई हैं

* * *

तुलसी साहब (हाथरस वाले) की बानी और जीवन-चरित्र ... ... २)

कबीर साहब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ ... ... ।≡)

कबीर साहब की शब्दावली, भाग २ ... ... ॥=)

कबीर साहब की अखरावती ... -)

पलटू साहब की शब्दावली (कुंडलिया इत्यादि) और जीवन-चरित्र, भाग १ ... ... ॥)

पलटू साहब की शब्दावली, भाग २ ... ... ।-)॥

चरनदास जी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १ ... ... ॥)॥

चरनदास जी की बानी, भाग २ ... ... ।≡)॥

रैदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ... ।-)॥

जगजीवन साहब की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १ ... ... ॥-)

सहजो बाई की बानी और जीवन-चरित्र ... ।)

दरिया साहब (मारवाड़ वाले) की बानी और जीवन-चरित्र, दूसरा एडिशन, कितनेही अधिक पदों और साखियों के साथ . ... ।)॥

अहिल्याबाई का जीवन-चरित्र भी अंगरेज़ी पद्य में छपा है (यह रमनीय पुस्तक एक मेम ने लिखी है संत बानी पुस्तक-माला की नहीं है) ... =)

मूल्य में डाक महसूल व वाल्यू पेअबल कमिशन शामिल नहीं है।

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस,
इलाहाबाद।

फ़रवरी सन १९०९ ई०